CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2017 with Solution PDF-Set 2/3 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

किसी देश का लोक जागरूक हो इसके लिए उसका चिंतनशील, संवेदनशील, अनुभवी, शक्तिशाली और क्रियाशील होना आवश्यक है । ये सभी गुण तभी आते हैं, जब लोग समाज के सामने आने वाली समस्याओं पर सोचते हैं, विचारते हैं और समाधान के नए-नए उपाय खोजते हैं । यदि किसी लोकतंत्र के लोग अपनी-अपनी घरेलू या व्यावसायिक समस्याओं से अलग कुछ सोच ही न पाते हों तो वहाँ लोकतंत्र कभी सफल नहीं हो सकता । यदि भारतीय जन भारत में फैले आतंकवाद पर, भ्रष्टाचार पर, संस्कारों पर, दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर, नए फैशन पर, नई बीमारियों पर या नई जीवन शैलियों पर कोई मत ही नहीं रखते तो वे अपना तंत्र कैसे स्थापित करेंगे ? भारत का समाज आज लिंग-भेद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसे मुद्दों पर अनेक समस्याएँ झेल रहा है । इन पर लोकमत जानने और बनाने का काम मीडिया के हाथों में है ।

प्रश्न यह है कि मीडिया के विविध रूप भारत के लोकमानस को शिक्षित, संस्कारित और जाग्रत करने के लिए क्या कर रहे हैं ? मीडिया का एक काम है – जनता को अधुनातन जानकारियों से युक्त बनाना । इस काम में हमारे अनेक निजी तथा सरकारी चैनल प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं । वे लोकमन को छूती हुई सामान्य से लेकर नई घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत कर रहे हैं । परंतु कुछ समाचार-पत्र और चैनल जानबूझ कर सनसनी फैलाने वाली सूचनाओं द्वारा जनता को क्षुब्ध, आतंकित या भयभीत कर रहे हैं । उन पर श्लीलता-अश्लीलता तथा गोपनीयता की सभी सीमाओं को लाँघने का भी आरोप लगता रहता है । इस पर संयम रखना स्वयं मीडिया-कर्मियों का दायित्व है । कभी-कभी वे ऐसी सामग्री प्रदर्शित करते हैं जो शत्रुदेश के लिए हितकर हो सकती है या कभी जातीय विद्वेष भड़क सकता है । ऐसी भूमिका देश हित में नहीं हो सकती इसलिए उससे बचना चाहिए ।

मीडिया की सर्वाधिक प्रभावी भूमिका विभिन्न चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कार या सर्वेक्षणों के माध्यम से पूरी होती है । जब आतंकवाद, भ्रष्टाचार. विदेश नीति, परमाणु-बिजली, अर्थव्यवस्था जैसे प्रबल मुद्दों पर जनता और विशेषज्ञ अपनी राय देते हैं तो जनता का भी 'मन' जाग्रत होता है । यही लोक-इच्छा लोकतंत्र को मज़बूत करती है । [15 अंक]

1(क). गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उसका प्रसंग है।
- प्रश्न की माँग के अनुसार मुख्य तथ्य पहचानकर संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानें गद्यांश में जागरूक जनता, लोकमत और लोकतंत्र की चर्चा है। इन सभी को जोड़ने वाला प्रमुख सूत्र मीडिया की भूमिका है। इसलिए केवल आतंकवाद अथवा भ्रष्टाचार को शीर्षक बनाना पूरे गद्यांश का प्रतिनिधित्व नहीं करेगा।

चरण 2: समग्र आशय को शीर्षक दें मीडिया जनता को नवीन जानकारी देता है और चर्चाओं, साक्षात्कारों तथा सर्वेक्षणों द्वारा उसका मत विकसित करता है। अंतिम पंक्ति इसी लोक-इच्छा को लोकतंत्र की शक्ति बताती है। शीर्षक में मीडिया और लोकतंत्र दोनों का संबंध आना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को कुछ शब्दों में समेटें।

1(ख). लोक की जागरूकता से क्या तात्पर्य है ? इसके लिए क्या आवश्यक है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उसका प्रसंग है।
- प्रश्न की माँग के अनुसार मुख्य तथ्य पहचानकर संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: लोक की जागरूकता समझें लोक की जागरूकता का तात्पर्य जनता का सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति सचेत होना, उन पर विचार करना तथा अपना मत बनाना है। गद्यांश में घरेलू और व्यावसायिक समस्याओं से आगे सोचने की आवश्यकता बताई

गई है। इसलिए जागरूकता का अर्थ केवल निजी हितों की जानकारी रखना नहीं है।

चरण 2: आवश्यक गुण स्पष्ट करें इसके लिए जनता का चिंतनशील, संवेदनशील, अनुभवी, शक्तिशाली और क्रियाशील होना आवश्यक है। ये गुण तब विकसित होते हैं जब लोग समाज की समस्याओं पर सोचते-विचारते हैं और समाधान के नए उपाय खोजते हैं। गद्यांश का आरंभ इन गुणों को लोक की जागरूकता से सीधे जोड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोक की जागरूकता सामाजिक समस्याओं के प्रति सचेत होकर विचार और मत बनाने की क्षमता है। इसके लिए चिंतनशीलता, संवेदनशीलता, अनुभव, शक्ति और क्रियाशीलता आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: अर्थ और आवश्यक गुण अलग-अलग लिखें तथा गुणों की पूरी सूची गद्यांश से लें।

1(ग). लोकमत बनाने का मुख्य काम कौन करता है ? कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उसका प्रसंग है।
- प्रश्न की माँग के अनुसार मुख्य तथ्य पहचानकर संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: उत्तरदायी माध्यम पहचानें लोकमत जानने और बनाने का मुख्य काम मीडिया करता है। गद्यांश में लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याओं के उल्लेख के बाद यह दायित्व सीधे मीडिया को सौंपा गया है। यहाँ लोकमत से आशय सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर जनता की राय से है।

चरण 2: लोकमत बनाने की प्रक्रिया बताएं मीडिया जनता को नवीन जानकारियों से युक्त करता है। चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों में जनता तथा विशेषज्ञों की राय सामने लाकर वह लोगों को सोचने और मत बनाने का अवसर देता है। इन कार्यक्रमों से जनता का मन जाग्रत होता है और लोकतंत्र को बल मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया लोकमत बनाता है। वह नवीन सूचनाएँ तथा जनता और विशेषज्ञों की राय प्रस्तुत करके सामाजिक-राष्ट्रीय मुद्दों पर लोगों की समझ और विचार विकसित करता है।

त्वरित सुझाव: कौन और कैसे वाले प्रश्न में पहले संस्था का नाम, फिर उसके काम करने के तरीके लिखें।

1(घ). लोकतंत्र किसे कहते हैं ? वह कब असफल हो जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उसका प्रसंग है।
- प्रश्न की माँग के अनुसार मुख्य तथ्य पहचानकर संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: लोकतंत्र का आशय बताएं लोकतंत्र जनता का शासन-तंत्र है, जिसमें जनता की इच्छा और विचारों का महत्व होता है। गद्यांश में अपना तंत्र स्थापित करने तथा लोक-इच्छा से लोकतंत्र मजबूत होने की बात कही गई है। इस संदर्भ में जागरूक लोकमत लोकतंत्र की सफलता का आधार है।

चरण 2: असफलता की स्थिति स्पष्ट करें जब लोग केवल अपनी घरेलू या व्यावसायिक समस्याओं तक सीमित रहते हैं और समाज-देश की समस्याओं पर सोचते ही नहीं, तब लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। आतंकवाद, भ्रष्टाचार तथा अन्य सार्वजनिक मुद्दों पर मत न रखने से जनता अपना तंत्र स्थापित करने की सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाती।

चरण 3: निष्कर्ष लोकतंत्र जनता की इच्छा और सहभागिता पर आधारित जनता का शासन-तंत्र है। जनता के निजी समस्याओं तक

सीमित रहने तथा सामाजिक-राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार न करने से वह असफल हो जाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद गद्यांश में दी गई असफलता की शर्त को कारण सहित स्पष्ट करें।

1(ङ). मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका कब दिखाई पड़ती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उसका प्रसंग है।
- प्रश्न की माँग के अनुसार मुख्य तथ्य पहचानकर संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: सनसनी और मर्यादा-भंग पहचानें मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका तब दिखाई देती है जब वह जानबूझकर सनसनी फैलाने वाली सूचनाएँ देकर जनता को क्षुब्ध, आतंकित या भयभीत करता है। श्लीलता-अश्लीलता और गोपनीयता की सीमाएँ लाँघना भी इसी भूमिका का रूप है। गद्यांश इन प्रवृत्तियों पर संयम की अपेक्षा करता है।

चरण 2: देश और समाज पर प्रभाव बताएं ऐसी सामग्री दिखाना जिससे शत्रुदेश को लाभ हो अथवा जातीय विद्वेष भड़के, देशहित के विरुद्ध है। मीडिया का दायित्व जनता को जागरूक बनाना है, इसलिए भय, उत्तेजना और सामाजिक वैमनस्य फैलाने वाला प्रदर्शन उसकी जिम्मेदारी से विचलन है। लेखक मीडिया-कर्मियों को स्वयं संयम रखने को कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष सनसनी और भय फैलाना, श्लीलता तथा गोपनीयता की सीमाएँ लाँघना और शत्रुदेश को लाभ या जातीय विद्वेष को बढ़ावा देने वाली सामग्री दिखाना मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सनसनी, मर्यादा-भंग और देशहित-विरोधी प्रभाव—तीनों पक्ष गद्यांश से चुनें।

1(च). मीडिया की भूमिका कैसे कार्यक्रमों से पूरी होती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उसका प्रसंग है।
- प्रश्न की माँग के अनुसार मुख्य तथ्य पहचानकर संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: कार्यक्रमों के रूप पहचानें मीडिया की प्रभावी भूमिका चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों जैसे कार्यक्रमों से पूरी होती है। गद्यांश का अंतिम अनुच्छेद इन्हीं माध्यमों को सर्वाधिक प्रभावी बताता है। इन कार्यक्रमों में लोगों को केवल घटना की जानकारी नहीं, विभिन्न विचारों से परिचित होने का अवसर भी मिलता है।

चरण 2: विषय और परिणाम जोड़ें जब इन कार्यक्रमों में आतंकवाद, भ्रष्टाचार, विदेश नीति, परमाणु-बिजली और अर्थव्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर जनता और विशेषज्ञ अपनी राय देते हैं, तो जनमानस जाग्रत होता है। लोग सार्वजनिक समस्याओं पर अपना मत बनाते हैं। यही जागरूक लोक-इच्छा लोकतंत्र को मजबूत करती है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दों पर आधारित चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों से पूरी होती है, जिनमें जनता और विशेषज्ञों की राय जनमानस को जाग्रत करती है।

त्वरित सुझाव: कार्यक्रमों के नाम के साथ उनका विषय और जनता पर पड़ने वाला प्रभाव भी लिखें।

1(छ). आज भारत का समाज किन समस्याओं से जूझ रहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उसका प्रसंग है।
- प्रश्न की माँग के अनुसार मुख्य तथ्य पहचानकर संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तर लिखना चाहिए।

चरण 1: प्रत्यक्ष कथन खोजें गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि भारत का समाज लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याएँ झेल रहा है। प्रश्न आज के भारतीय समाज की समस्याओं के बारे में है, इसलिए इसी सीधे कथन को उत्तर का आधार बनाना चाहिए। केवल सामान्य ज्ञान के आधार पर दूसरी समस्याएँ जोड़ना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: प्रसंग से संबंध समझें लेखक इन समस्याओं का उल्लेख यह बताने के लिए करता है कि जनता का इनके प्रति जागरूक होना और अपना मत रखना जरूरी है। इन पर लोकमत जानने और बनाने का दायित्व मीडिया के पास है। इस प्रकार समस्याओं की सूची गद्यांश में मीडिया की सामाजिक जिम्मेदारी से जुड़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष आज भारत का समाज मुख्य रूप से लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याओं से जूझ रहा है।

त्वरित सुझाव: किसी सूची पर आधारित प्रश्न में गद्यांश की प्रत्यक्ष सूची चुनें और बाहरी उदाहरण न जोड़ें।

1(ज). लोकतंत्र की स्थापना और विकास में मीडिया का क्या महत्त्व है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकतंत्र में जागरूक लोकमत का निर्माण आवश्यक है।
- मीडिया सूचना, विचार-विमर्श और जनभागीदारी को जोड़ता है।

चरण 1: सूचना और चेतना का संबंध गद्यांश के अनुसार मीडिया जनता को नवीन घटनाओं और जानकारियों से परिचित कराता है। इससे लोग निजी तथा व्यावसायिक समस्याओं से आगे बढ़कर आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अर्थव्यवस्था और अन्य सामाजिक विषयों पर विचार कर पाते हैं। चिंतनशील और संवेदनशील जनता ही अपने तंत्र को स्थापित करने में सक्रिय भूमिका निभाती है।

चरण 2: लोकमत और लोकतांत्रिक विकास चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों तथा सर्वेक्षणों में जनता और विशेषज्ञों की राय सामने आती है। इससे जनमानस शिक्षित और जाग्रत होता है तथा लोकमत बनता है। गद्यांश का कथन है कि यही लोक-इच्छा लोकतंत्र को मजबूत करती है। इसलिए मीडिया को सनसनी और विद्वेष से बचकर जिम्मेदारी से काम करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया जनता को सूचित और जागरूक करके, सामाजिक समस्याओं पर विचार के अवसर देकर तथा लोकमत बनाकर लोकतंत्र की स्थापना और विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सूचना, जनजागरण और लोकमत को लोकतंत्र की मजबूती से जोड़कर लिखें।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

देश नहीं होता है केवल
सीमाओं से घिरा मकान
देश नहीं होता है कोई
सजी हुई ऊँची दूकान
देश नहीं क्लब जिसमें बैठे
करते रहें सदा हम मौज
देश नहीं होता बंदूकें
देश नहीं होता है फौज
जहाँ प्रेम के दीपक जलते
जहाँ इरादे नहीं बदलते
हर दिल में अरमान मचलते
सज्जन सीना ताने चलते,
वही हुआ करता है देश ।
पहले हम खुद को पहचानें
फिर पहचानें अपना देश
एक दमकता सत्य बनेगा,
नही रहेगा सपना देश ।।

[5 अंक]

2(क). कवि के विचार में किन बातों को देश नहीं माना जा सकता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश को केवल भौतिक साधनों और बाहरी संरचना तक सीमित नहीं मानता।
- पद्यांश में जिन वस्तुओं का निषेध है, उन्हें एक साथ पहचानना चाहिए।

चरण 1: निषेध वाले बिंब पहचानना कवि बार-बार "देश नहीं कहकर स्पष्ट करता है कि केवल सीमाओं से घिरा मकान, सजी हुई ऊँची दुकान और मौज करने का क्लब देश नहीं हैं। ये बिंब भूभाग, बाहरी वैभव और निजी आनंद का संकेत करते हैं।

चरण 2: शक्ति मात्र की सीमा समझना कवि बंदूकों और फौज को भी अपने-आप में देश नहीं मानता। इन सबका होना ही देश की पूरी पहचान नहीं बनाता; अगली पंक्तियों में प्रेम और दृढ़ इरादों को महत्त्व दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार केवल सीमाओं से घिरा मकान, सजी हुई ऊँची दुकान, मौज करने का क्लब, बंदूकें और फौज देश नहीं माने जा सकते।

त्वरित सुझाव: "देश नहीं से शुरू होने वाली सभी पंक्तियों की वस्तुओं को उत्तर में समेटें।

2(ख). देश की पहचान क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में देश की पहचान नागरिकों के मानवीय गुणों से बनती है।
- प्रेम, दृढ़ संकल्प, आकांक्षा और सज्जनों का सम्मान केंद्रीय संकेत हैं।

चरण 1: सकारात्मक पंक्तियों से प्रमाण लेना "जहाँ प्रेम के दीपक जलते और "जहाँ इरादे नहीं बदलते से स्पष्ट है कि प्रेमपूर्ण संबंध और दृढ़ संकल्प देश की पहचान हैं। नागरिकों का परस्पर जुड़ाव देश को सार्थक बनाता है।

चरण 2: अन्य विशेषताओं को जोड़ना "हर दिल में अरमान मचलते आशाओं से भरे जनजीवन का संकेत है। "सज्जन सीना ताने चलते बताता है कि वहाँ अच्छे लोग सम्मान और निर्भयता से जीते हैं। कवि ऐसे समाज को देश कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष देश की पहचान प्रेम, अटल इरादों, लोगों की जीवंत आकांक्षाओं और सज्जनों के सम्मानपूर्ण तथा निर्भय जीवन से होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रेम और दृढ़ इरादों के साथ अरमान तथा सज्जनों के सम्मान का उल्लेख करें।

2(ग). आशय स्पष्ट कीजिए "जहाँ प्रेम के दीपक जलते, जहाँ इरादे नहीं बदलते" । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- "प्रेम के दीपक परस्पर स्नेह और सद्भाव का प्रतीक है।
- "इरादे नहीं बदलते दृढ़ संकल्प और निष्ठा को व्यक्त करता है।

चरण 1: प्रेम के दीपक का अर्थ जिस समाज में लोग एक-दूसरे के प्रति प्रेम, अपनापन और सद्भाव रखते हैं, वहाँ प्रेम के दीपक जलते हैं। यहाँ दीपक वास्तविक दीये से बढ़कर मानवीय संबंधों के प्रकाश का प्रतीक है।

चरण 2: अटल इरादों का अर्थ लोग अपने अच्छे उद्देश्यों और देश के प्रति निष्ठा पर दृढ़ रहें तथा कठिनाइयों में अपने संकल्प से न डिगें, यही इरादे न बदलने का आशय है। दोनों पंक्तियाँ देश के आवश्यक मानवीय आधार बताती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि सच्चे देश में नागरिकों के बीच प्रेम और सद्भाव होता है तथा वे अपने श्रेष्ठ उद्देश्यों और देश के प्रति संकल्प पर अटल रहते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रेम के दीपक को सद्भाव और न बदलते इरादों को दृढ़ संकल्प से जोड़ें।

2(घ). बंदूकों और फौजों का होना कब सार्थक है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि बंदूकों और फौज को मात्र देश की संपूर्ण पहचान नहीं मानता।
- कविता के सकारात्मक मूल्यों के संदर्भ में सैन्य शक्ति की उपयोगिता समझनी चाहिए।

चरण 1: प्रश्न का संदर्भ समझना "देश नहीं होता बंदूकें, देश नहीं होता है फौज का अर्थ यह है कि केवल सैन्य साधनों से देश नहीं बन जाता। देश की आत्मा नागरिकों के प्रेम, दृढ़ संकल्प, आकांक्षाओं और सज्जनता में है।

चरण 2: सार्थक होने की स्थिति बताना बंदूकें और फौज तब सार्थक हैं जब वे ऐसे देश तथा उसके लोगों की सुरक्षा करें, जहाँ प्रेम और सद्भाव हों और सज्जन निर्भय होकर जी सकें। उनकी शक्ति देश के मानवीय मूल्यों और नागरिक जीवन की रक्षा से सार्थक होती है।

चरण 3: निष्कर्ष बंदूकों और फौजों का होना तब सार्थक है जब वे प्रेम, सद्भाव और दृढ़ संकल्प वाले देश तथा उसके नागरिकों की सुरक्षा करें और सज्जन निर्भय रह सकें।

त्वरित सुझाव: सैन्य शक्ति का उद्देश्य देश और उसके प्रेमपूर्ण, सम्मानपूर्ण जनजीवन की रक्षा बताएं।

2(ङ). आपके विचार से खुद को पहचानना क्यों महत्त्वपूर्ण है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश की पहचान से पहले स्वयं की पहचान पर बल देता है।
- आत्मपहचान अपने गुणों, क्षमताओं और उत्तरदायित्वों का बोध कराती है।

चरण 1: काव्य-पंक्ति का आधार लेना "पहले हम खुद को पहचानें, फिर पहचानें अपना देश में कवि आत्मबोध को देशबोध का आधार मानता है। व्यक्ति जब अपनी भूमिका समझता है, तभी देश को केवल बाहरी वस्तुओं के रूप में देखने से आगे बढ़ता है।

चरण 2: व्यक्तिगत मत स्पष्ट करना मेरे विचार से स्वयं को पहचानकर हम अपनी क्षमताओं, कमियों और कर्तव्यों को समझते हैं। इससे प्रेम, दृढ़ संकल्प और सदाचार को अपने जीवन में उतारकर देश के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। तभी आदर्श देश का सपना वास्तविकता बन सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष खुद को पहचानना इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि उससे हमें अपनी क्षमताओं और कर्तव्यों का बोध होता है तथा हम जिम्मेदार नागरिक बनकर देश के निर्माण में योगदान दे पाते हैं।

त्वरित सुझाव: अपनी राय को "पहले हम खुद को पहचानें पंक्ति और नागरिक कर्तव्य से जोड़ें।

3(क). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : अबला नहीं, सबला है नारी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय का केंद्रीय विचार नारी की क्षमता, आत्मनिर्भरता और समान अधिकार है। निबंध में भूमिका, तर्कपूर्ण विस्तार और उपसंहार का क्रम रखें।
- नारी की शक्ति को केवल सहनशीलता तक सीमित न करें; शिक्षा, निर्णय लेने की स्वतंत्रता और सामाजिक योगदान को भी आधार बनाएँ।

चरण 1: विषय और रूपरेखा भूमिका में नारी को कमजोर मानने की धारणा का उल्लेख करें। विस्तार में उसके पारिवारिक तथा सामाजिक योगदान, शिक्षा और उपलब्धियों को रखें। फिर भेदभाव की बाधाओं तथा उन्हें दूर करने के उपायों पर विचार करें। अंत में समान अवसरों की आवश्यकता स्थापित करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **अबला नहीं, सबला है नारी**

नारी मानव समाज की निर्माता और उसकी प्रगति की समान भागीदार है। उसे अबला कहना उसकी प्रतिभा, परिश्रम और साहस की उपेक्षा करना है। जिन परिस्थितियों में उसे कमजोर समझा गया, वे प्राय: उसकी स्वाभाविक अक्षमता के कारण नहीं, बल्कि सामाजिक बंधनों और अवसरों के अभाव के कारण बनीं।

परिवार में नारी बच्चों का पालन-पोषण करती है, संस्कार देती है और अनेक जिम्मेदारियाँ निभाती है। किंतु उसका कार्यक्षेत्र घर तक सीमित नहीं है। शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, खेल, प्रशासन और रक्षा जैसे क्षेत्रों में महिलाएँ अपनी योग्यता सिद्ध कर रही हैं। कल्पना चावला की वैज्ञानिक यात्रा और मैरी कॉम का संघर्ष बताते हैं कि दृढ़ संकल्प के सामने कठिनाइयाँ टिक नहीं सकतीं। ग्रामीण महिलाएँ भी खेती, श्रम और छोटे उद्यमों से अर्थव्यवस्था को शक्ति देती हैं।

फिर भी अनेक बालिकाओं को शिक्षा से वंचित किया जाता है। दहेज, हिंसा और असमान व्यवहार उनकी स्वतंत्रता में बाधा डालते हैं। इन समस्याओं के रहते केवल नारी की प्रशंसा करना पर्याप्त नहीं है। परिवार को बेटियों और बेटों को समान अवसर देने होंगे। समाज को सुरक्षित वातावरण तथा कार्यस्थलों पर सम्मान सुनिश्चित करना होगा। शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता से महिलाएँ अपने जीवन के निर्णय अधिक स्वतंत्रता से ले सकती हैं।

नारी सशक्तीकरण पुरुषों के विरोध का नाम नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण साझेदारी की स्थापना है। जब स्त्री को सम्मान और अधिकार मिलते हैं, तब परिवार और राष्ट्र दोनों आगे बढ़ते हैं। इसलिए हमें अपनी सोच और व्यवहार से स्वीकार करना चाहिए कि नारी अबला नहीं, सबला

है।

चरण 3: निष्कर्ष नारी की शक्ति को पहचानने का सही अर्थ उसे शिक्षा, सुरक्षा, सम्मान और निर्णय की स्वतंत्रता देना है। समान अवसर ही उसके सामर्थ्य को पूर्ण रूप से विकसित करते हैं।

त्वरित सुझाव: निबंध में नारी की उपलब्धियों के साथ शिक्षा और समान अवसरों के ठोस उपाय अवश्य जोड़ें; केवल प्रशंसात्मक विशेषण न लिखें।

3(ख). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : महाशक्ति के रूप में उभरता भारत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस विषय में भारत की उभरती शक्ति के आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय आधारों का संतुलित विवेचन अपेक्षित है।
- महाशक्ति बनने की संभावना के साथ गरीबी, असमानता, शिक्षा और पर्यावरण जैसी चुनौतियों को जोड़ने से निबंध तर्कसंगत बनता है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा भूमिका में भारत की बढ़ती क्षमता रखें। मुख्य भाग में युवा जनसंख्या, कृषि, उद्योग, विज्ञान, लोकतंत्र और वैश्विक सहयोग पर विचार करें। इसके बाद विकास की बाधाएँ तथा समाधान लिखें। उपसंहार में शक्ति का संबंध जनकल्याण और जिम्मेदारी से जोड़ें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **महाशक्ति के रूप में उभरता भारत**

भारत प्राचीन सभ्यता और युवा ऊर्जा का अनूठा संगम है। स्वतंत्रता के बाद अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए उसने कृषि, उद्योग, शिक्षा और विज्ञान में उल्लेखनीय प्रगति की है। उसकी बढ़ती क्षमताएँ विश्व में उसकी भूमिका को अधिक प्रभावशाली बना रही हैं। इसीलिए भारत को उभरती हुई महाशक्ति के रूप में देखा जाता है।

भारत की बड़ी युवा जनसंख्या उसकी महत्त्वपूर्ण पूँजी है। यदि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल और रोजगार मिले, तो वे उत्पादन और नवाचार को नई गति दे सकते हैं। कृषि देश की खाद्य आवश्यकताओं का आधार है, जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्र आर्थिक विकास में योगदान देते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय प्रतिभा ने विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान में भी भारत ने अपनी क्षमता दिखाई है। मंगलयान जैसे अभियान वैज्ञानिक दक्षता और आत्मविश्वास के प्रतीक हैं। देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था, विविध संस्कृतियाँ तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भावना उसकी शक्ति को व्यापक आधार देती हैं। योग, साहित्य और भारतीय संस्कृति भी विभिन्न समाजों के बीच संवाद का माध्यम हैं।

परंतु महाशक्ति बनने का मार्ग चुनौतियों से मुक्त नहीं है। गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, भ्रष्टाचार और पर्यावरण प्रदूषण विकास को कमजोर करते हैं। इनके समाधान के लिए पारदर्शी प्रशासन, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ, सबके लिए शिक्षा और संतुलित विकास आवश्यक हैं। स्त्रियों तथा वंचित वर्गों की भागीदारी के बिना राष्ट्रीय प्रगति अधूरी रहेगी।

सच्ची महाशक्ति वही है जिसके नागरिक सुरक्षित, शिक्षित और सम्मानपूर्ण जीवन जीते हों। भारत को अपनी शक्ति का उपयोग शांति, सहयोग और मानव कल्याण के लिए करना चाहिए। नागरिक कर्तव्यनिष्ठ बनें और संस्थाएँ जनहित को प्राथमिकता दें, तो भारत की संभावनाएँ स्थायी उपलब्धियों में बदल सकती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की महाशक्ति बनने की संभावना उसकी युवा ऊर्जा, आर्थिक क्षमता और वैज्ञानिक प्रगति में निहित है। समावेशी विकास तथा जिम्मेदार वैश्विक भूमिका से यह संभावना सुदृढ़ होगी।

त्वरित सुझाव: भारत की शक्ति बताते समय आर्थिक और वैज्ञानिक आधारों के साथ चुनौतियाँ भी लिखें; निष्कर्ष में जनकल्याण को सफलता की कसौटी बनाएँ।

3(ग). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : मेरा प्रिय कवि [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिपरक निबंध में लेखक अपनी पसंद बताते हुए उसके ठोस कारण प्रस्तुत करता है। कवि के जीवन का संक्षिप्त परिचय, रचनाओं की विशेषताएँ और पाठक पर उनका प्रभाव विषय को पूर्ण बनाते हैं।
- भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन तथा उपसंहार निबंध के प्रमुख अंग हैं। कवि की प्रशंसा उसके विचारों और रचनाओं के प्रमाण पर आधारित होनी चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और विषयवस्तु इस विषय के लिए कबीर को प्रिय कवि चुना जा सकता है। पहले उनके व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय दें। फिर उनकी भक्ति, सामाजिक समानता, आडंबर-विरोध तथा सहज भाषा की चर्चा करें। अंत में स्पष्ट करें कि उनकी कविता आज हमारे जीवन को किस प्रकार दिशा देती है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **मेरा प्रिय कवि**

हिंदी साहित्य में अनेक कवियों ने अपनी रचनाओं से समाज को नई दृष्टि दी है। इनमें कबीर मेरे प्रिय कवि हैं। उनकी कविता में जीवन का अनुभव, निर्भीक विचार और मनुष्य के प्रति गहरा प्रेम मिलता है। वे केवल उपदेश नहीं देते, बल्कि पाठक को अपने आचरण पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।

कबीर भक्तिकाल की निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने ईश्वर को किसी एक मंदिर, मस्जिद अथवा धार्मिक कर्मकांड की सीमा में नहीं बाँधा। उनके लिए सच्ची भक्ति का आधार मन की निर्मलता और प्रेम है। वे बाहरी प्रदर्शन के स्थान पर आत्मज्ञान और सदाचार को महत्त्व देते हैं। उनका यह दृष्टिकोण मुझे इसलिए अच्छा लगता है कि वह धर्म को मनुष्य के दैनिक व्यवहार से जोड़ता है।

कबीर ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच और धार्मिक कट्टरता का विरोध किया। उन्होंने व्यक्ति की श्रेष्ठता का आधार जन्म के स्थान पर ज्ञान और आचरण को माना। उनकी वाणी हमें दूसरों की निंदा करने से पहले अपने दोष देखने की प्रेरणा देती है। आज जब छोटी-छोटी भिन्नताएँ भी विवाद का कारण बन जाती हैं, तब उनके विचार परस्पर सम्मान और भाईचारे का मार्ग दिखाते हैं।

उनकी भाषा सहज, बोलचाल के निकट और प्रभावशाली है। लोकजीवन के परिचित उदाहरणों से वे गहरी बात समझा देते हैं। छोटी-सी साखी में भी ऐसा विचार मिलता है जो लंबे समय तक स्मृति में रहता है। उनकी सीधी और तीखी अभिव्यक्ति पाठक को निष्क्रिय नहीं रहने देती।

कबीर की कविता पढ़कर मुझे विनम्र, विवेकशील और संवेदनशील बनने की प्रेरणा मिलती है। वे सिखाते हैं कि सच्चाई को साहस से कहना चाहिए, किंतु मन में किसी के प्रति घृणा नहीं रखनी चाहिए। मनुष्यता को सर्वोपरि रखने वाली यही दृष्टि उन्हें मेरा प्रिय कवि बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कबीर की निर्भीकता, सहज भाषा और समानता का संदेश मेरी पसंद के आधार हैं। उपर्युक्त निबंध परिचय से आरंभ होकर काव्य-विशेषताओं, व्यक्तिगत प्रभाव और उपसंहार तक विषय का क्रमबद्ध विकास करता है।

त्वरित सुझाव: अपने प्रिय कवि के दो या तीन ठोस गुण चुनें और प्रत्येक गुण को उसके विचार या रचना की विशेषता से जोड़ें; केवल जीवनवृत्त न लिखें।

3(घ). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : मैं और मेरा देश [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मपरक सामाजिक निबंध में निजी अनुभव और व्यापक सामाजिक दृष्टि का संतुलन आवश्यक है। देश से अपने संबंध की चर्चा में अधिकारों के साथ नागरिक कर्तव्यों का विवेचन भी होना चाहिए।
- विषय का विकास भूमिका, देश की विशेषताओं, अपनी जिम्मेदारियों और भविष्य के संकल्प के क्रम में किया जा सकता है। भाषा सरल, विचार स्पष्ट और अनुच्छेद परस्पर जुड़े होने चाहिए।

चरण 1: निबंध की रूपरेखा आरंभ में देश से अपने भावनात्मक संबंध को स्पष्ट करें। फिर भारत की विविधता, साझा संस्कृति और स्वतंत्रता के मूल्य की चर्चा करें। मुख्य भाग में छात्र तथा नागरिक के रूप में अपने कर्तव्य लिखें। अंत में देश के विकास में सक्रिय योगदान का संकल्प प्रस्तुत करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध **मैं और मेरा देश**

मेरा देश भारत मेरे लिए केवल मानचित्र पर खींची गई सीमाओं का नाम नहीं है। यह मेरी भाषा, स्मृतियों, संबंधों और संस्कारों का आधार है। यहाँ की धरती पर मेरा बचपन बीता है और इसी समाज से मुझे सीखने तथा आगे बढ़ने के अवसर मिले हैं। इसलिए देश के प्रति मेरा प्रेम एक आत्मीय संबंध के साथ जिम्मेदारी का भाव भी है।

भारत की सबसे सुंदर विशेषता उसकी विविधता है। यहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म, वेशभूषाएँ और जीवन-पद्धतियाँ हैं। फिर भी लोगों की आशाएँ और सुख-दुःख उन्हें एक-दूसरे से जोड़ते हैं। विद्यालय में अलग-अलग पृष्ठभूमि के मित्रों के साथ पढ़ते हुए मुझे अनुभव होता है कि भिन्नता हमारी शक्ति बन सकती है। दूसरों की परंपराओं का सम्मान करके ही हम इस शक्ति को सुरक्षित रख सकते हैं।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने त्याग और संघर्ष से देश को स्वतंत्र कराया। उनकी विरासत का सम्मान केवल राष्ट्रीय पर्व मनाने से पूरा नहीं होता। स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी सार्थक होगा जब प्रत्येक व्यक्ति सम्मान से जी सके, शिक्षा प्राप्त करे और अपनी क्षमता विकसित कर सके। गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव और पर्यावरण की हानि जैसी समस्याएँ मुझे यह याद दिलाती हैं कि देश के निर्माण का कार्य अभी जारी है।

एक विद्यार्थी के रूप में मेरा पहला कर्तव्य ईमानदारी से पढ़ना और योग्य बनना है। साथ ही मुझे नियमों का पालन करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, जल बचाना और अपने आसपास सफाई रखनी चाहिए। किसी जरूरतमंद की सहायता करना तथा अफवाहों के स्थान पर तथ्यों पर विश्वास करना भी उपयोगी योगदान है। मैं अपने देश से जितने अधिकार चाहता हूँ, उतनी ही तत्परता से अपने कर्तव्य निभाना चाहता हूँ।

मेरा सपना ऐसा भारत है जहाँ अवसर जन्म या आर्थिक स्थिति पर निर्भर न हों और प्रत्येक नागरिक सुरक्षित अनुभव करे। इस सपने को पूरा करने के लिए मैं अपने काम में ईमानदारी, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता और सीखने की इच्छा बनाए रखूँगा। मेरे छोटे-छोटे जिम्मेदार कार्य ही मेरे देशप्रेम की सच्ची अभिव्यक्ति होंगे।

चरण 3: निष्कर्ष देश और नागरिक का संबंध परस्पर सहयोग का है। अपने ज्ञान, श्रम, ईमानदारी और सद्भाव से देश की उन्नति में भाग लेना ही देशप्रेम को व्यवहार में उतारना है।

त्वरित सुझाव: देश की प्रशंसा के साथ अपने तीन व्यावहारिक कर्तव्य अवश्य जोड़ें, ताकि निबंध का केंद्र शीर्षक में आए 'मैं' और देश का संबंध बना रहे।

---

4. आतंकवादी गतिविधियों की वृद्धि पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और दो समाधान भी सुझाइए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र सार्वजनिक समस्या की ओर समाज और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करता है। भाषा औपचारिक, संयत और तथ्यपरक होनी चाहिए।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पता, विषय, संबोधन, समस्या, दो स्पष्ट समाधान तथा समापन आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पहले आतंकवादी गतिविधियों से जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का उल्लेख करें। इसके बाद दो समाधान दें—सुरक्षा तथा खुफिया तंत्र का समन्वय और नागरिकों में जागरूकता तथा सद्भाव का विकास। किसी समुदाय पर आरोप लगाए बिना सार्वजनिक सुरक्षा की माँग करें।

चरण 2: पूरा नमूना पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 जुलाई, 2017

सेवा में,

संपादक महोदय

दैनिक जनवाणी

नई दिल्ली

विषय: आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि पर चिंता।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचारपत्र के माध्यम से मैं आतंकवादी गतिविधियों की बढ़ती घटनाओं की ओर शासन और समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। इन घटनाओं में निर्दोष नागरिक मारे जाते हैं तथा अनेक परिवार उजड़ जाते हैं। भय का वातावरण सामान्य जनजीवन, शिक्षा, व्यापार और सामाजिक विश्वास को प्रभावित करता है। हिंसा फैलाने वालों का उद्देश्य समाज में असुरक्षा और वैमनस्य पैदा करना है।

इस समस्या के समाधान के लिए पहला सुझाव है कि सुरक्षा एजेंसियों और खुफिया विभागों के बीच सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान हो। संवेदनशील स्थानों की निगरानी बढ़े तथा प्राप्त सूचनाओं पर समय से कार्रवाई की जाए। दूसरा सुझाव है कि नागरिक जागरूकता और सामुदायिक सद्भाव को मजबूत किया जाए। विद्यालयों और स्थानीय संगठनों के माध्यम से लोगों को संदिग्ध गतिविधियों की सूचना जिम्मेदारी से देने तथा अफवाहों से बचने की प्रेरणा मिले।

कृपया इस विषय को अपने समाचारपत्र में स्थान दें, जिससे संबंधित अधिकारी प्रभावी कदम उठाएँ और जनता भी अपनी जिम्मेदारी समझे।

धन्यवाद।

भवदीय

अमन कुमार

चरण 3: निष्कर्ष इस पत्र में आतंकवाद से उत्पन्न चिंता व्यक्त करते हुए सुरक्षा तंत्र के समन्वय तथा जनजागरूकता और सद्भाव के दो समाधान सुझाए गए हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय विषय स्पष्ट रखें और समस्या बताने के बाद दो अलग, व्यावहारिक समाधान अवश्य दें।

अथवा

4. किसी राजमार्ग पर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं पर तत्काल सहायता न मिलने की समस्या पर पत्र लिखते हुए परिवहन अधिकारी को सुझाव भी दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिवहन अधिकारी को लिखा पत्र सड़क सुरक्षा और दुर्घटना के बाद तत्काल सहायता की व्यवस्था से संबंधित प्रशासनिक पत्र है।
- शिकायत के साथ सहायता उपलब्ध कराने के व्यावहारिक उपाय दें। प्रारूप में पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन और हस्ताक्षर अवश्य हों।

चरण 1: पत्र की रूपरेखा तैयार करना राजमार्ग पर दुर्घटनाओं के बाद सहायता में होने वाली देरी को मुख्य समस्या रखें। फिर निश्चित दूरी पर एंबुलेंस और प्राथमिक उपचार केंद्र, स्पष्ट आपात संपर्क-संकेत तथा समन्वित राहत व्यवस्था सुझाएँ। भाषा विनम्र और कार्रवाई की माँग स्पष्ट हो।

चरण 2: पूरा नमूना पत्र 18, शांति विहार

गाजियाबाद

15 जुलाई, 2017

सेवा में,
क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी
परिवहन विभाग
गाजियाबाद
विषय: राजमार्ग पर दुर्घटनाग्रस्त लोगों को तत्काल सहायता उपलब्ध कराने के संबंध में।
महोदय,
मैं आपका ध्यान हमारे क्षेत्र से गुजरने वाले राजमार्ग पर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और घायलों को समय पर सहायता न मिलने की समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। दुर्घटना के बाद लोग सहायता के लिए भटकते रहते हैं। आसपास उपचार की सुविधा न होने और एंबुलेंस देर से पहुँचने के कारण घायलों की स्थिति गंभीर हो जाती है। समय पर उपचार मिले तो अनेक लोगों की जान बच सकती है।
मेरा सुझाव है कि राजमार्ग पर निश्चित दूरी पर प्राथमिक उपचार केंद्र और एंबुलेंस की व्यवस्था की जाए। प्रमुख स्थानों पर आपात सहायता के संपर्क नंबर तथा निकटतम अस्पताल की दिशा दर्शाने वाले स्पष्ट सूचना-पट्ट लगाए जाएँ। पुलिस, अस्पताल और परिवहन विभाग में ऐसा समन्वय हो कि सूचना मिलते ही बचाव दल घटनास्थल पर पहुँच सके। टोलकर्मियों तथा स्थानीय स्वयंसेवकों को प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण भी दिया जाए।
दुर्घटनाएँ रोकने के लिए गति-सीमा का पालन सुनिश्चित किया जाए और खराब प्रकाश, गड्ढों तथा अस्पष्ट संकेतों को शीघ्र ठीक कराया जाए। कृपया इन सुझावों पर तत्काल कार्रवाई कर यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।
धन्यवाद।
भवदीय
राहुल शर्मा

चरण 3: निष्कर्ष परिवहन अधिकारी से राजमार्ग पर त्वरित चिकित्सा सहायता, स्पष्ट आपात सूचना और विभागीय समन्वय की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल दुर्घटनाओं के कारण न लिखें; दुर्घटना के तुरंत बाद सहायता पहुँचाने की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दें।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : संदेह करना पत्रकार के स्वभाव में क्यों आवश्यक है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकार का दायित्व सूचना की सत्यता की जाँच करके पाठक तक विश्वसनीय समाचार पहुँचाना है।
- संदेह का अर्थ किसी सूचना को बिना प्रमाण स्वीकार न करना है; यह निराधार आरोप लगाने से अलग है।

चरण 1: संदेह का उद्देश्य समझना पत्रकार को मिली हर सूचना पूरी या सही नहीं होती। उसमें अफवाह, पक्षपात अथवा किसी का निजी हित शामिल हो सकता है। इसलिए जानकारी को तुरंत सच मान लेना उचित नहीं है।

चरण 2: तथ्य-जाँच से संबंध स्पष्ट करना संदेह करने पर पत्रकार स्रोत की विश्वसनीयता परखता है, प्रमाण जुटाता है और अन्य स्रोतों से पुष्टि करता है। इससे भ्रामक सूचना का प्रकाशन रुकता है तथा समाचार की निष्पक्षता और विश्वसनीयता बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष संदेह करना आवश्यक है क्योंकि इससे पत्रकार किसी सूचना को आँख मूँदकर स्वीकार नहीं करता, बल्कि उसकी जाँच करके सत्य और विश्वसनीय समाचार प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संदेह को नकारात्मक आदत न बताएँ; उसे सूचना की जाँच और सत्य की खोज से जोड़ें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'डेस्क' किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संगठन में समाचार-संकलन और समाचार-संपादन अलग कार्य हैं। डेस्क संपादन से जुड़ा विभाग है।
- डेस्क पर प्राप्त सामग्री को जाँचकर, व्यवस्थित करके और उचित शीर्षक देकर प्रकाशन या प्रसारण के योग्य बनाया जाता है।

चरण 1: डेस्क की पहचान समाचारपत्र या समाचार-संगठन के संपादकीय विभाग में जिस स्थान अथवा विभाग में संवाददाताओं और समाचार एजेंसियों से आई खबरों का संपादन किया जाता है, उसे डेस्क कहते हैं। यहाँ यह शब्द केवल मेज के अर्थ में प्रयुक्त नहीं है।

चरण 2: मुख्य कार्य बताना डेस्क पर खबरों का चयन, भाषा तथा तथ्यों की जाँच, आवश्यक काट-छाँट और शीर्षक देने जैसे काम होते हैं। इस प्रकार प्राप्त समाचार-सामग्री को पाठकों या दर्शकों के लिए स्पष्ट और प्रकाशन अथवा प्रसारण के योग्य रूप दिया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष डेस्क समाचार-संगठन का वह संपादकीय विभाग है जहाँ प्राप्त खबरों का संपादन करके उन्हें प्रकाशन या प्रसारण के योग्य बनाया जाता है।

त्वरित सुझाव: डेस्क की परिभाषा में संपादकीय विभाग और समाचारों का संपादन—इन दोनों बातों को अवश्य शामिल करें।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'एंकर बाइट' क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर स्टूडियो से समाचार प्रस्तुत करता है और संवाददाता घटनास्थल से जानकारी देता है।
- समाचार की पुष्टि और प्रभाव के लिए संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त कथन भी सुनाया जाता है।

चरण 1: प्रस्तुति की स्थिति जब एंकर किसी समाचार को प्रस्तुत करने के बाद उसी विषय से संबंधित व्यक्ति का रिकॉर्ड किया गया संक्षिप्त बयान दर्शकों को सुनवाता है, तब समाचार को प्रत्यक्ष कथन का आधार मिलता है।

चरण 2: शब्द का अर्थ इस समाचार-प्रस्तुति शैली को एंकर बाइट कहते हैं। यहाँ बाइट संबंधित व्यक्ति के बयान या साक्षात्कार का चुना हुआ छोटा अंश होता है, पूरा साक्षात्कार नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर द्वारा समाचार प्रस्तुत करने के बाद उससे संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त कथन या बाइट सुनवाना एंकर बाइट कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में एंकर की समाचार-प्रस्तुति और संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त बयान, दोनों अवश्य लिखें।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : अंशकालिक पत्रकार से क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण समाचार-संस्था के साथ उनके कार्य-संबंध के आधार पर भी किया जाता है।
- अंशकालिक पत्रकार का कार्य पूर्णकालिक नियमित नियुक्ति से भिन्न होता है।

चरण 1: कार्य-संबंध पहचानिए अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संस्था के लिए पूरे समय का नियमित कर्मचारी बनकर कार्य नहीं करता। वह सीमित समय में या आवश्यकता के अनुसार उस संस्था को समाचार और सूचनाएँ भेजता है।

चरण 2: भुगतान की प्रकृति उसे प्रायः प्रकाशित सामग्री, भेजे गए समाचारों अथवा तय पारिश्रमिक के आधार पर भुगतान किया जाता है। ऐसे पत्रकार को सामान्यतः स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जो पत्रकार किसी समाचार-संस्था के लिए नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी के रूप में नहीं, बल्कि आंशिक समय में समाचार जुटाने और भेजने का काम करता है, वह अंशकालिक पत्रकार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: अंशकालिक का अर्थ केवल कम समाचार लिखना नहीं; उत्तर में संस्था से आंशिक समय का कार्य-संबंध स्पष्ट करें।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : सम्पादकीय किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सम्पादकीय समाचार-पत्र की विचारपरक सामग्री है, जिसमें किसी महत्त्वपूर्ण विषय का विश्लेषण किया जाता है।
- इसमें व्यक्त दृष्टिकोण समाचार-पत्र की संपादकीय नीति और संस्थागत मत का प्रतिनिधित्व करता है।

चरण 1: विषय और स्वरूप सम्पादकीय में किसी समसामयिक घटना, समस्या या सार्वजनिक महत्त्व के मुद्दे पर तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें तथ्य बताने के साथ उनका विवेचन और मूल्यांकन भी होता है।

चरण 2: मत का प्रतिनिधित्व यह सामान्य समाचार या किसी पाठक का पत्र नहीं होता। इसके माध्यम से समाचार-पत्र अपना दृष्टिकोण प्रकट करता है और पाठकों को उस मुद्दे पर विचार करने की दिशा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी समसामयिक महत्त्वपूर्ण विषय पर समाचार-पत्र का अपना मत व्यक्त करने वाला तर्कपूर्ण, विश्लेषणात्मक लेख सम्पादकीय कहलाता है।

त्वरित सुझाव: सम्पादकीय की पहचान के लिए समसामयिक विषय, विश्लेषण और समाचार-पत्र का अपना मत, ये बातें जोड़ें।

6. 'वनों की उपयोगिता' पर एक फीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर में तथ्य, संवेदनशील वर्णन और रोचक प्रस्तुति के माध्यम से किसी विषय को पाठक के जीवन से जोड़ा जाता है।
- वनों की उपयोगिता में पर्यावरणीय संतुलन, जैव-विविधता, आजीविका और संरक्षण का मानवीय पक्ष समाहित है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति रोचक शीर्षक तथा लेखक के नाम के बाद दृश्यात्मक आरंभ करें। फिर वनों का प्रकृति और मनुष्य के जीवन में योगदान बताकर उनके संरक्षण की प्रेरणा दें। भाषा सहज, चित्रात्मक और तथ्यपरक रखें।

चरण 2: संपूर्ण नमूना फीचर **वन: धरती की साँस, जीवन की आस**

लेखक: क ख ग

सुबह की हल्की धूप जब पत्तियों से छनकर धरती पर उतरती है, तो पक्षियों का कलरव किसी स्वागत-गीत जैसा लगता है। मिट्टी की सौंधी गंध और ठंडी हवा के बीच खड़े होकर समझ आता है कि वन केवल पेड़ों का समूह नहीं, जीवन का स्पंदन हैं।

पेड़ वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। उनकी छाया और वाष्पोत्सर्जन आसपास के तापमान को संतुलित रखने में सहायक होते हैं। वन जलचक्र को बनाए रखने और वर्षाजल को भूमि में समाने का अवसर देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ों की जड़ें मिट्टी को बाँधती हैं; इस प्रकार उपजाऊ मिट्टी का कटाव कम होता है।

वन असंख्य जीव-जंतुओं, पक्षियों और पौधों का घर हैं। किसी पुराने पेड़ के कोटर में बसे पक्षी से लेकर झाड़ियों में पलते छोटे जीव तक, सभी इस संसार के अंग हैं। एक प्रजाति का नष्ट होना भी प्राकृतिक संबंधों की पूरी शृंखला को प्रभावित कर सकता है।

मनुष्य का जीवन भी वनों से गहराई से जुड़ा है। फल, औषधियाँ, बाँस, लकड़ी और अनेक वन-उत्पाद हमारी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं। वनवासी समुदायों की आजीविका, परंपराएँ और सांस्कृतिक स्मृतियाँ इन्हीं वनों में रची-बसी हैं। उनके अनुभवों को सम्मान दिए बिना

वन-संरक्षण अधूरा रहेगा।

परंतु बढ़ती कटाई और आग इन हरे संसारों को उजाड़ रही हैं। केवल पौधा लगाकर तस्वीर खिंचवा लेना पर्याप्त नहीं। स्थानीय प्रजातियों के पौधों को बचाना, उनकी देखभाल करना, आग रोकना और अनावश्यक कटाई पर नियंत्रण रखना भी आवश्यक है।

अगली बार किसी पेड़ की छाँव में रुकें, तो उस ठंडक को प्रकृति का मौन उपहार समझें। जंगल बचेंगे तो जल, मिट्टी, हवा और आने वाली पीढ़ियों की आशाएँ भी बचेंगी।

चरण 3: निष्कर्ष वन जीवन के आधार हैं; उनकी उपयोगिता समझकर संरक्षण को अपने व्यवहार और सामूहिक प्रयासों का हिस्सा बनाना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: फीचर को निबंध की तरह केवल तथ्य-सूची न बनाएँ; दृश्यात्मक आरंभ, मानवीय संबंध और प्रभावी अंत जोड़ें।

अथवा

6. 'महानगरीय प्रदूषण' पर एक फीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी सामाजिक विषय को रोचक दृश्य, मानवीय अनुभव और तथ्यपरक विवेचन के साथ प्रस्तुत करता है। इसका शीर्षक आकर्षक और विषय के अनुकूल होना चाहिए।
- महानगरीय प्रदूषण का संबंध वायु, जल, ध्वनि और कचरे से है। कारणों तथा प्रभावों के साथ व्यावहारिक समाधान देने से रचना सार्थक बनती है।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। आरंभ में महानगर की सुबह का ऐसा दृश्य रखें जिससे पाठक प्रदूषण अनुभव कर सके। इसके बाद अलग अनुच्छेदों में समस्या, उसके कारण, जनजीवन पर प्रभाव और सुधार के उपाय प्रस्तुत करें। फीचर की भाषा सहज, चित्रात्मक और संवेदनशील रहे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना वाहनों के धुएँ, निर्माण की धूल, औद्योगिक उत्सर्जन, गंदे नालों और लगातार बजते हॉर्न को प्रमुख कारण बनाएँ। बच्चों, बुजुर्गों और सड़क पर काम करने वालों की परेशानी का उल्लेख करें। सार्वजनिक परिवहन, हरियाली, कचरे के पृथक्करण तथा प्रशासन और नागरिकों की साझा जिम्मेदारी को समाधान में शामिल करें।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श फीचर **महानगरीय प्रदूषण : साँसों पर धुएँ का पहरा**

लेखक : अमन

सुबह के सात बजे हैं। सड़क पर गाड़ियों की कतार है और हवा में धुएँ की परत तैर रही है। विद्यालय जाता बच्चा नाक ढकता है, जबकि फुटपाथ का दुकानदार आँखें मलते हुए अपना दिन शुरू करता है। महानगर जाग चुका है, पर उसकी हवा अभी भी बीमार लगती है।

सुविधाओं और अवसरों के आकर्षण ने महानगरों को फैलाया है। साथ ही निजी वाहनों की बढ़ती संख्या, निर्माण की उड़ती धूल और कारखानों का धुआँ जीवन को कठिन बना रहे हैं। सड़कों पर हॉर्न का शोर पीछा नहीं छोड़ता। नदियों में गिरता गंदा पानी और खुले में पड़ा कूड़ा इस संकट को और गहरा करते हैं।

प्रदूषण केवल आकाश का रंग नहीं बदलता; वह हमारी दिनचर्या और स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालता है। स्वच्छ हवा के लिए बच्चे खुले मैदान खोजते हैं। बुजुर्गों को सैर के समय भी सावधानी बरतनी पड़ती है। सड़क किनारे काम करने वालों के लिए धुएँ से बचना और कठिन है।

इस तस्वीर को बदलना असंभव नहीं है। सुविधाजनक सार्वजनिक परिवहन और पैदल चलने के सुरक्षित मार्ग निजी वाहनों पर निर्भरता घटा सकते हैं। निर्माण स्थलों की धूल रोकना, कचरा न जलाना, गंदे पानी का उपचार करना तथा पेड़ों की रक्षा करना आवश्यक है। नियमों का पालन कराने में प्रशासन और अपनी आदतें बदलने में नागरिकों को आगे आना होगा।

महानगर की प्रगति का अर्थ केवल ऊँची इमारतें नहीं है। उसकी असली पहचान वह खुली हवा भी है जिसमें हर व्यक्ति निश्चिंत होकर साँस ले सके।

चरण 4: निष्कर्ष यह फीचर दृश्यात्मक आरंभ, प्रदूषण के विविध रूपों, मानवीय प्रभाव और साझा समाधान के माध्यम से विषय को रोचक तथा सार्थक रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: फीचर को किसी जीवंत दृश्य से शुरू करें और उसी दृश्य से जुड़े मानवीय अनुभव के सहारे कारणों तथा समाधानों तक पहुँचें।

---

7. 'नारी सुरक्षा' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय पर सुव्यवस्थित विचार, तर्क और सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं। शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका, विवेचन तथा उपसंहार उसका सामान्य क्रम है।
- नारी सुरक्षा का आधार समानता, गरिमा और निर्भय होकर जीवन जीने का अधिकार है। चर्चा में परिवार, समाज, शिक्षण संस्थानों और प्रशासन की जिम्मेदारी स्पष्ट होनी चाहिए।

चरण 1: प्रारूप निश्चित करना पहले विषय के अनुरूप शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। भूमिका में सुरक्षा का व्यापक अर्थ स्पष्ट करें। मुख्य भाग में असुरक्षा के कारण, उसके सामाजिक प्रभाव और सुधार के उपाय लिखें। अंतिम अनुच्छेद में समानता तथा सामूहिक जिम्मेदारी का संदेश दें।

चरण 2: विचारों का क्रम सुरक्षा को केवल घर के बाहर तक सीमित न रखें। घरेलू हिंसा, सार्वजनिक स्थानों पर उत्पीड़न और डिजिटल माध्यमों में दुर्व्यवहार का उल्लेख करें। शिक्षा में समानता, शिकायत की सुगम व्यवस्था, संवेदनशील प्रशासन और पीड़ित व्यक्ति को सहयोग जैसे उपाय सुझाएँ। महिलाओं पर प्रतिबंध लगाने को समाधान बताने से बचें, क्योंकि सुरक्षा का उद्देश्य उनकी स्वतंत्रता सुनिश्चित करना है।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श आलेख **नारी सुरक्षा : सम्मान और समानता का संकल्प**

लेखक : अमन

किसी समाज की प्रगति का मूल्यांकन इस बात से भी होता है कि वहाँ महिलाएँ कितनी सुरक्षित और स्वतंत्र हैं। नारी सुरक्षा का अर्थ केवल अपराध से बचाव नहीं है। इसका अर्थ घर, विद्यालय, कार्यस्थल और सार्वजनिक स्थानों पर सम्मानपूर्वक तथा निर्भय होकर जीने का अवसर भी है।

आज महिलाएँ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैं, फिर भी अनेक स्थानों पर उन्हें हिंसा, भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। डिजिटल माध्यमों में अभद्र संदेश और निजता का उल्लंघन भी चिंता के विषय हैं। असुरक्षा का वातावरण उनकी शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्र आवागमन को प्रभावित करता है।

इस समस्या की जड़ में स्त्री को कमतर समझने वाली सोच भी है। इसलिए परिवर्तन की शुरुआत परिवार और विद्यालय से होनी चाहिए। बच्चों को समानता, सहमति और परस्पर सम्मान का व्यवहार सिखाना आवश्यक है। लड़के और लड़की के लिए अलग नैतिक मापदंड रखना अन्यायपूर्ण है। सुरक्षा के नाम पर महिलाओं की पढ़ाई या आवाजाही रोकना उचित समाधान नहीं है।

प्रशासन को सार्वजनिक परिवहन, सड़कों और कार्यस्थलों को अधिक सुरक्षित बनाना चाहिए। शिकायत दर्ज कराने की व्यवस्था सरल तथा संवेदनशील हो। पीड़ित महिला को दोष देने के बजाय उसे सहयोग, गोपनीयता और न्याय मिलने का भरोसा दिया जाए। अपराधों पर प्रभावी कार्रवाई के साथ समाज को उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठानी होगी।

आत्मरक्षा का प्रशिक्षण और अधिकारों की जानकारी उपयोगी हैं, किंतु सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर नहीं डाली जा सकती। परिवार, संस्थाएँ, नागरिक और प्रशासन मिलकर ही सुरक्षित वातावरण बना सकते हैं। जब सम्मान व्यवहार का हिस्सा बनेगा और समानता जीवन का आधार होगी, तभी नारी सुरक्षा का संकल्प पूरा होगा।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख नारी सुरक्षा को समानता और गरिमा से जोड़ते हुए सामाजिक सोच में बदलाव, संवेदनशील शिकायत व्यवस्था और साझा उत्तरदायित्व का समर्थन करता है।

त्वरित सुझाव: नारी सुरक्षा पर लिखते समय समस्या के साथ ठोस उपाय दें और स्वतंत्रता पर प्रतिबंध के स्थान पर समानता तथा सम्मान पर बल दें।

अथवा

7. 'बदलते जीवन मूल्य' विषय पर आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय का विचारपूर्ण, क्रमबद्ध विवेचन है। इसमें शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, विषय-विस्तार और सार्थक निष्कर्ष होना चाहिए।
- जीवन-मूल्य मनुष्य के व्यवहार को दिशा देने वाले आदर्श हैं। इस विषय में बदलती परिस्थितियों के साथ मूल्यों के सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तन दोनों का मूल्यांकन आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक के बाद लेखक का नाम दिया जाएगा। भूमिका में जीवन-मूल्यों का अर्थ, मध्य भाग में उनके परिवर्तन के कारण और प्रभाव तथा अंतिम भाग में मानवीय मूल्यों के संरक्षण का उपाय प्रस्तुत करेंगे। भाषा विचारप्रधान, सरल और अनुच्छेदों में व्यवस्थित रहेगी।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख बदलते जीवन मूल्य

लेखक : अजय

समय के साथ समाज बदलता है और उसके साथ मनुष्य की सोच तथा व्यवहार भी बदलते हैं। सत्य, करुणा, ईमानदारी और सहयोग जैसे जीवन-मूल्य मनुष्य को संवेदनशील बनाते हैं। किंतु आज सफलता का आकलन प्रायः धन, पद और भौतिक सुविधाओं से किया जाने लगा है।

उपभोक्तावादी संस्कृति, तीव्र प्रतिस्पर्धा और दिखावे की प्रवृत्ति ने संबंधों को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवारों की जगह छोटे परिवार बढ़ रहे हैं। व्यस्त जीवन में बुजुर्गों के लिए समय निकालना कठिन समझा जाता है। सामाजिक माध्यमों पर संपर्क बढ़ा है, पर प्रत्यक्ष संवाद और आत्मीयता कई बार घटे हैं। निजी लाभ के सामने ईमानदारी और सार्वजनिक हित की उपेक्षा चिंता का विषय है।

फिर भी हर परिवर्तन हानिकारक नहीं है। स्त्री-पुरुष समानता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, वैज्ञानिक दृष्टि और सामाजिक अन्याय के विरोध ने समाज को अधिक जागरूक बनाया है। पुरानी रूढ़ियों को छोड़ना मूल्यों का पतन नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण प्रगति है। आवश्यकता यह पहचानने की है कि कौन-सा परिवर्तन मानव गरिमा बढ़ाता है और कौन-सा हमें स्वार्थी बनाता है।

परिवार और विद्यालय बच्चों में संवेदना तथा उत्तरदायित्व का विकास करें। बड़ों का आचरण ईमानदारी, श्रम और सहयोग का उदाहरण बने। तकनीक का उपयोग संबंध मजबूत करने तथा ज्ञान बढ़ाने में हो। आधुनिकता तभी सार्थक होगी जब सुविधा के साथ संवेदनशीलता और स्वतंत्रता के साथ सामाजिक जिम्मेदारी भी बढ़े।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन-मूल्यों में परिवर्तन का मूल्यांकन मानवता, समानता और उत्तरदायित्व के आधार पर होना चाहिए। प्रगति के साथ करुणा और ईमानदारी बचाए रखना ही आलेख का केंद्रीय संदेश है।

त्वरित सुझाव: आलेख में केवल अतीत की प्रशंसा न करें; परिवर्तन का एक सकारात्मक पक्ष देकर संतुलित निष्कर्ष लिखें।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी ।
हारकर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया । [8 अंक]

8(क). बात की चूड़ी मरने का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बात को पेंच की तरह और उसकी अर्थपूर्ण पकड़ को चूड़ी के रूपक द्वारा व्यक्त किया गया है।
- सफल अभिव्यक्ति में भाषा विचार के अनुकूल होती है; अनावश्यक जोर-जबरदस्ती उसकी सहजता और अर्थ को नष्ट कर सकती है।

चरण 1: चूड़ी के रूपक को समझना पेंच की चूड़ी खराब होने पर वह घूमता तो है, किंतु अपनी जगह ठीक से पकड़ नहीं बना पाता। इसी प्रकार बात की चूड़ी मरना उसके अर्थ और प्रभाव की पकड़ समाप्त हो जाने का संकेत है।

चरण 2: काव्यांश से आशय स्पष्ट करना कवि ने बात को भाषा में व्यक्त करने के लिए इतना जोर लगाया कि उसकी सहजता, स्पष्टता और संप्रेषणीयता नष्ट हो गई। इसलिए वह भाषा में बेकार घूमने लगी। शब्द तो रह गए, किंतु वे इच्छित अर्थ को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रकट नहीं कर पाए। इसीलिए कवि की आशंका सच हो जाती है और अभिव्यक्ति का प्रयास विफल रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष बात की चूड़ी मरने का आशय भाषा के साथ जबरदस्ती करने से बात की सहजता, अर्थपूर्ण पकड़ और संप्रेषण-शक्ति का नष्ट हो जाना है।

त्वरित सुझाव: चूड़ी का अर्थ आभूषण न लें; उसे पेंच की पकड़ से जोड़कर बात के प्रभाव की हानि समझाएँ।

8(ख). 'बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं' – टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बात विचार या भाव है और भाषा उसे दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम है; दोनों की अनुकूलता अभिव्यक्ति की सफलता का आधार है।
- काव्यांश में भाषा पर जोर-जबरदस्ती से बात का निष्प्रभावी हो जाना इसी संबंध की महत्ता प्रकट करता है।

चरण 1: बात और भाषा की भूमिका बात अभिव्यक्ति की विषयवस्तु है, जबकि भाषा उसे रूप प्रदान करती है। केवल विचार होना पर्याप्त नहीं; उसे ऐसे शब्दों में रखना पड़ता है जिनसे पाठक या श्रोता उसका सही अर्थ ग्रहण कर सके।

चरण 2: काव्यांश के आधार पर टिप्पणी भाषा सहज, स्पष्ट और बात के अनुरूप हो तो भाव प्रभावपूर्ण ढंग से पहुँचता है। जब कवि भाषा के साथ जोर-जबरदस्ती करता है, तो बात की चूड़ी मर जाती है। इससे स्पष्ट है कि बात को भाषा से अलग करके सफल अभिव्यक्ति संभव नहीं; दोनों का तालमेल आवश्यक है। अतः शब्द-चयन विचार के अनुरूप होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष बात और भाषा परस्पर पूरक हैं। बात भाषा को सार्थक विषय देती है और उपयुक्त भाषा बात को स्पष्ट तथा प्रभावी बनाती है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में बात को विचार तथा भाषा को माध्यम बताएँ और काव्यांश के एक संकेत से दोनों का संबंध प्रमाणित करें।

8(ग). अभिव्यक्ति में भाषा कब बेकार हो जाती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अभिव्यक्ति का उद्देश्य विचार और भाव को सही रूप में दूसरे तक पहुँचाना है; भाषा की उपयोगिता इसी संप्रेषण से तय होती है।
- काव्यांश का जोर-जबरदस्ती वाला संकेत भाषा के कृत्रिम प्रयोग और बात के प्रभाव के नष्ट होने का संबंध बताता है।

चरण 1: भाषा के बेकार होने की स्थिति भाषा तब बेकार हो जाती है जब वह बात को स्पष्ट और सहज रूप में प्रकट करने के स्थान पर उसे उलझाने लगती है। शब्दों को जबरन ढालना और अभिव्यक्ति पर अनावश्यक दबाव डालना विचार को उसके स्वाभाविक रूप से दूर कर देता है।

चरण 2: काव्यांश से पुष्टि कवि कहता है कि जोर-जबरदस्ती से बात की चूड़ी मर गई और वह भाषा में बेकार घूमने लगी। यहाँ शब्दों का रह जाना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि वे बात की अर्थपूर्ण पकड़ और प्रभाव को व्यक्त नहीं कर रहे। जब भाव संप्रेषित ही न हो, तब भाषा अपना उद्देश्य खो देती है।

चरण 3: निष्कर्ष जब भाषा के साथ अनावश्यक जोर-जबरदस्ती से बात की सहजता, स्पष्टता और अर्थ नष्ट हो जाएँ तथा वह भाव संप्रेषित न कर सके, तब वह अभिव्यक्ति में बेकार हो जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को कठिन शब्दों की निंदा तक सीमित न रखें; मूल कसौटी बताएं कि भाषा इच्छित बात पहुँचा रही है या नहीं।

8(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – "हारकर मैंने उसे कील की तरह, उसी जगह ठोंक दिया ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पेंच की चूड़ी और कील के बिंबों से सहज अभिव्यक्ति तथा जबरन स्थापित कथन के बीच अंतर दिखाया गया है।
- हारकर शब्द कवि की असफलता और विवशता बताता है; अंतिम क्रिया सहज समाधान के स्थान पर जबरदस्ती का संकेत है।

चरण 1: प्रसंग और बिंब कवि की बात भाषा के साथ जोर-जबरदस्ती के कारण अपनी प्रभावपूर्ण पकड़ खो चुकी है। जिस प्रकार खराब चूड़ी वाला पेंच घूमता रहता है, उसी प्रकार बात भी भाषा में बेकार घूमती है। इस स्थिति से कवि निराश हो जाता है।

चरण 2: पंक्तियों का आशय बात को सहज और सही ढंग से व्यक्त न कर पाने पर कवि उसे कील की तरह उसी स्थान पर जबरन ठोंक देता है। अर्थात वह कथन को स्वाभाविक रूप देने में हार मानकर उसे बलपूर्वक स्थापित कर देता है। इससे रचना पूरी करने की विवशता तो दिखती है, पर सफल और सहज संप्रेषण प्राप्त नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में कवि की विवशता व्यक्त हुई है। बात की स्वाभाविक अभिव्यक्ति में असफल होकर उसने उसे भाषा में जबरन स्थापित कर दिया, जैसे कील ठोंक दी जाती है।

त्वरित सुझाव: कील को वास्तविक वस्तु न मानें; हारकर और ठोंक दिया शब्दों से असफलता तथा जबरन अभिव्यक्ति का भाव स्पष्ट करें।

अथवा

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

अर्ध राति गए कपि नहिं आयउ । राम उठाइ अनुज उर लायउ ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई । उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू । पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू ।। [8 अंक]

8(क). "कपि" कहाँ गए थे ? उनके न आने से चिंता बढ़ने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में लक्ष्मण मूर्च्छित हैं और राम उनके जीवन को लेकर व्याकुल हैं।
- कपि का संकेत हनुमान की ओर है; उनके लौटने की प्रतीक्षा उपचार की तात्कालिक आवश्यकता से जुड़ी है।

चरण 1: कपि के जाने का उद्देश्य यहाँ कपि हनुमान हैं। वे मूर्च्छित लक्ष्मण के उपचार के लिए हिमालय के द्रोणगिरि पर्वत पर संजीवनी बूटी लेने गए थे। राम की आशा उनके लौटने पर टिकी है, क्योंकि औषधि मिलने पर ही लक्ष्मण को पुनः चेतना में लाया जा सकता है।

चरण 2: चिंता बढ़ने का कारण अर्धरात्रि बीत जाने पर भी हनुमान नहीं लौटे थे। लक्ष्मण अचेत पड़े थे और उपचार में विलंब हो रहा था। सूर्योदय से पहले औषधि पहुँचने की आवश्यकता तथा भाई के प्राणों पर संकट के कारण राम की चिंता बढ़ती जाती है। वे अनुज को हृदय से लगाकर विलाप करते हैं। इस प्रतीक्षा में बीतता हर क्षण उनके लिए भाई के वियोग की आशंका को और गहरा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष हनुमान हिमालय के द्रोणगिरि पर्वत पर संजीवनी लेने गए थे। उनके देर तक न लौटने से लक्ष्मण के समय पर उपचार और प्राणरक्षा की चिंता राम को व्याकुल कर रही थी।

त्वरित सुझाव: कपि की पहचान बताकर औषधि, समय की कमी और लक्ष्मण की प्राणरक्षा का संबंध स्पष्ट कीजिए।

8(ख). "सो अनुराग" – राम किसके और कैसे अनुराग की बात कर रहे हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुराग का अर्थ यहाँ लक्ष्मण का राम के प्रति गहरा स्नेह और समर्पण है।
- काव्यांश में त्याग और कष्ट-सहन इस प्रेम के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

चरण 1: अनुराग के पात्र की पहचान राम लक्ष्मण के अपने प्रति अनुराग की बात कर रहे हैं। लक्ष्मण का स्वभाव सदा कोमल रहा है और वे राम को दुखी नहीं देख सकते थे। इसी कारण अचेत पड़े भाई को संबोधित करते हुए राम उनके पुराने स्नेह का स्मरण करते हैं।

चरण 2: अनुराग का स्वरूप यह निःस्वार्थ, त्यागमय और सेवा-भाव से भरा भ्रातृप्रेम है। लक्ष्मण राम के हित के लिए माता-पिता को छोड़कर वन आए और शीत, धूप तथा वायु के कष्ट सहते रहे। अब राम के व्याकुल वचन सुनकर भी वे नहीं उठ रहे हैं; इस मौन से व्यथित राम पूछते हैं कि उनका वह प्रेम अब कहाँ गया। इस पुकार में शिकायत से अधिक प्रिय भाई को फिर सचेत देखने की आकुल इच्छा व्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष राम लक्ष्मण के निःस्वार्थ और त्यागमय भ्रातृप्रेम को याद कर रहे हैं, जिसके कारण लक्ष्मण ने उनके साथ वन के सारे कष्ट सहे।

त्वरित सुझाव: सो अनुराग समझाते समय माता-पिता का त्याग और वन के कष्टों को प्रेम के प्रमाण के रूप में जोड़िए।

8(ग). "राम किस स्थिति में पिता का वचन न मानने की बात कहते हैं" ? इसकी संभावना पर अपने विचार प्रकट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम का कथन भाई के संभावित वियोग से उत्पन्न तीव्र शोक की अभिव्यक्ति है।
- कथन की संभावना पर विचार करते समय राम की पितृभक्ति और मर्यादापालन भी ध्यान में रखना चाहिए।

चरण 1: पिता का वचन न मानने की स्थिति राम कहते हैं कि यदि उन्हें पहले मालूम होता कि वन में प्रिय भाई का वियोग सहना पड़ेगा, तो वे पिता का वह वचन न मानते जिसके कारण वन आए थे। मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर उन्हें भाई को खो देने का भय सता रहा है। इसलिए वे वनगमन के निर्णय तक पर दुख व्यक्त करते हैं।

चरण 2: कथन की संभावना पर विचार यह शोक के आवेग में निकला उद्गार है, किसी निश्चित अवज्ञा का संकल्प नहीं। राम पिता के वचन और अपनी मर्यादा का पालन करने वाले हैं; इसलिए उनके सचमुच वचन तोड़ने की संभावना बहुत कम है। कवि इस कथन से दिखाते हैं कि भाई के प्रति उनका प्रेम इतना प्रबल है कि संकट में वे सामान्य मनुष्य की तरह विचलित हो उठते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम संभावित भ्रातृवियोग का पूर्वज्ञान होने पर पिता का वचन न मानने की बात कहते हैं। यह उनकी व्याकुलता है; उनके मर्यादापालक चरित्र के आधार पर वास्तविक अवज्ञा असंभाव्य लगती है।

त्वरित सुझाव: यदि की शर्त और शोक के आवेग को अलग पहचानकर कथन की संभावना पर संतुलित मत दीजिए।

8(घ). राम के मत में लक्ष्मण द्वारा किए गए त्याग और कष्ट सहन की चर्चा कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम लक्ष्मण के त्याग को उनके निःस्वार्थ भ्रातृप्रेम की अभिव्यक्ति मानते हैं।
- काव्यांश में माता-पिता का त्याग और वन की प्राकृतिक कठिनाइयाँ स्पष्ट रूप से उल्लिखित हैं।

चरण 1: लक्ष्मण द्वारा किए गए त्याग राम के अनुसार लक्ष्मण ने उनके हित के लिए माता-पिता को छोड़ दिया। वे घर की सुविधा और परिवार का स्नेह छोड़कर राम के साथ वन चले आए। उनका यह निर्णय अपने सुख की अपेक्षा बड़े भाई के साथ रहने और उनकी सेवा करने को महत्त्व देने वाला था।

चरण 2: वन में सहे गए कष्ट लक्ष्मण ने राम के साथ वन में शीत, तेज धूप और वायु की कठिनाइयाँ सहीं। राम कहते हैं कि लक्ष्मण का स्वभाव कोमल था और वे उन्हें दुखी नहीं देख सकते थे, फिर भी उनके लिए इतना कष्ट उठाते रहे। मूर्च्छित भाई को देखकर राम इन्हीं उपकारों को याद करते हैं और उनकी निष्काम सेवा से अभिभूत हो जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लक्ष्मण ने राम के हित में माता-पिता और घर का सुख छोड़ा तथा वन में शीत, धूप और वायु के कष्ट सहे। राम इन्हें लक्ष्मण के असीम स्नेह और समर्पण का प्रमाण मानते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तजेहु पितु माता और हिम आतप बाता के आशय को दो अलग बिंदुओं में स्पष्ट कीजिए।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : विप्लव के बादल का स्वागत कौन-सा वर्ग करता है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में विप्लव के बादल सामाजिक परिवर्तन और शोषण से मुक्ति के प्रतीक हैं।
- बादलों की गर्जना का प्रभाव संपन्न शोषक वर्ग और शोषित किसानों पर अलग-अलग होता है।

चरण 1: स्वागत करने वाले वर्ग की पहचान विप्लव के बादल का स्वागत शोषित, पीड़ित और निर्धन किसान-मजदूर वर्ग करता है। कविता का जीर्ण शरीर और दुर्बल भुजाओं वाला कृषक इसी वर्ग का प्रतिनिधि है। वह बादल को अधीर होकर बुलाता है, क्योंकि उसके जीवन का सार शोषकों ने चूस लिया है और उसके पास संघर्ष से क्षीण हुआ अस्तित्व ही बचा है।

चरण 2: स्वागत के आर्थिक और सामाजिक कारण बादल की वर्षा खेतों को सींचती है और किसान के लिए अन्न तथा जीवन की आशा जगाती है। प्रतीकात्मक स्तर पर उसका विप्लव शोषणकारी व्यवस्था को बदलने की शक्ति रखता है। निर्धन वर्ग को भरोसा है कि क्रांति से उसका उत्पीड़न समाप्त होगा और उसे अपने श्रम का अधिकार मिल सकेगा। इसलिए बादल की गर्जना उसके लिए भय का कारण नहीं, मुक्ति का आह्वान है।

चरण 3: वर्गीय अंतर से आशय स्पष्ट करना संपन्न शोषक वर्ग को व्यवस्था बदलने पर अपनी सत्ता और संपत्ति खोने का भय है। इसके विपरीत अभावग्रस्त किसान के पास खोने के लिए वैभव नहीं है। वह परिवर्तन में अपनी दशा सुधरने की संभावना देखता है। इसलिए कविता में विप्लव के बादल से उसका संबंध उत्साह, आशा और स्वागत का है।

चरण 4: निष्कर्ष विप्लव के बादल का स्वागत शोषित किसान और श्रमिक करते हैं, क्योंकि उसमें उन्हें जीवनदायी वर्षा के साथ शोषण से मुक्ति और न्यायपूर्ण परिवर्तन की आशा दिखाई देती है।

त्वरित सुझाव: वर्षा के प्रत्यक्ष लाभ और क्रांति के प्रतीकात्मक लाभ दोनों समझाकर किसान के स्वागत का कारण लिखिए।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : 'कैमरे में बंद अपाहिज कविता' कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता करुणा के नाम पर किसी की पीड़ा का प्रदर्शन करने वाली मानसिकता पर व्यंग्य करती है।
- कार्यक्रम-संचालक की भाषा और व्यवहार से दिखावटी संवेदना तथा व्यावसायिक स्वार्थ उजागर होते हैं।

चरण 1: पीड़ा को प्रदर्शन बनाना कविता में टेलीविजन कार्यक्रम के लोग अपाहिज व्यक्ति को एक स्वतंत्र, सम्मानित मनुष्य की तरह नहीं देखते। वे उसकी शारीरिक असमर्थता को दर्शकों के सामने प्रभावशाली दृश्य बनाने का साधन बनाते हैं। उसका दुख समझने और उसकी सहायता करने की अपेक्षा कार्यक्रम में करुणा का दृश्य उत्पन्न करना उनका उद्देश्य बन जाता है।

चरण 2: संचालक के प्रश्नों और कैमरे का व्यवहार संचालक उससे बार-बार उसके दुख और अपाहिजपन के बारे में ऐसे प्रश्न पूछता है जिनसे वह असहज हो और रो पड़े। कैमरा उसके चेहरे की बेचैनी और आँखों को उभारता है। उसकी झिझक, मौन और मानसिक पीड़ा का सम्मान नहीं किया जाता। कार्यक्रम बनाने वाले उसकी इच्छा के स्थान पर अपने तय प्रभाव को प्राथमिकता देते हैं।

चरण 3: संवेदनहीनता का निष्कर्ष निकालना वे दर्शकों को भी रुलाकर अपने कार्यक्रम को सफल सिद्ध करना चाहते हैं। इस प्रकार पीड़ित और दर्शक, दोनों की भावनाएँ उनके उद्देश्य की वस्तु बन जाती हैं। सामाजिक सरोकार का दावा करने पर भी वे व्यक्ति की गरिमा तथा वास्तविक जीवन की कठिनाइयों से दूर रहते हैं। कविता इसी कृत्रिम करुणा और मानवीय दुख के उपभोग की प्रवृत्ति का पर्दाफाश करती है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता दिखाती है कि कुछ कार्यक्रम निर्माता अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा समझने के बजाय उसे रुलाकर दर्शकों को भावुक करना चाहते हैं। उनका यह व्यवहार करुणा की आड़ में छिपी संवेदनहीनता को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संचालक के सवाल, कैमरे की भूमिका और दर्शकों को रुलाने के उद्देश्य को एक क्रम में जोड़िए।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : भोर के नभ को राख से लीपा चौका क्यों कहा गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' में प्रकृति का चित्र घरेलू जीवन की परिचित वस्तुओं के माध्यम से उभरता है।
- दृश्य-बिंब रंग, प्रकाश और आकार को पाठक की आँखों के सामने साकार करता है। यहाँ राख से लिपे चौके का उपमान भोर के आकाश का रंग और ताजगी स्पष्ट करता है।

चरण 1: आकाश और चौके की समानता पहचानिए सूर्योदय से पहले आकाश में हलका धूसर, कुछ मटमैला और सफेदी मिला हुआ रंग दिखाई देता है। इस समय रात का गहरा अँधेरा कम हो चुका होता है, किंतु सूर्य का तेज प्रकाश अभी नहीं फैला होता। यह रंग राख से लीपे गए चौके के रंग से मिलता-जुलता है। इसलिए कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा चौका कहा है।

चरण 2: गीलेपन और वातावरण का आशय समझिए कविता में चौके के अभी गीले पड़े होने का उल्लेख भी है। उससे प्रातःकालीन आकाश की नमी, शीतलता और ताजगी का अनुभव होता है। जैसे नया लीपा चौका स्वच्छ और ताजा लगता है, वैसे ही रात के बीतने पर भोर का आकाश नया और निर्मल दिखाई देता है। कवि ने किसी भव्य वस्तु के स्थान पर दैनिक घरेलू दृश्य चुना है; इससे प्रकृति का सौंदर्य आत्मीय बन जाता है और पाठक अपने परिचित परिवेश में उस दृश्य को अनुभव कर पाता है। इस तुलना का आशय आकाश में सचमुच राख होने से नहीं, रंग और वातावरण की समानता से है।

चरण 3: निष्कर्ष भोर के नभ का धूसर-सफेद रंग राख से लीपे चौके जैसा है। चौके के गीलेपन से आकाश की नमी, स्वच्छता और प्रातःकालीन ताजगी भी व्यक्त होती है।

त्वरित सुझाव: पहले राख और आकाश के रंग की समानता लिखिए, फिर गीले चौके से प्रकट नमी और ताजगी को जोड़िए।

---

10. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर ।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस ।। [6 अंक]

10(क). काव्यांश का भाव सौंदर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में पात्रों की मनःस्थिति तथा प्रसंग में व्यक्त रस और भावों को स्पष्ट किया जाता है।
- दिए गए अंश में राम का प्रलाप, वानरों की व्याकुलता और हनुमान का आगमन भाव-परिवर्तन की धुरी हैं।

चरण 1: करुण वातावरण स्पष्ट कीजिए राम का शोकपूर्ण प्रलाप सुनकर वानर-समूह व्याकुल हो उठता है। अपने प्रभु का दुःख उन्हें भीतर तक प्रभावित करता है। इससे राम के प्रति उनका प्रेम, संवेदनशीलता और आत्मीय संबंध व्यक्त होते हैं। राम का विलाप पूरे वातावरण को करुणा से भर देता है।

चरण 2: हनुमान के आगमन का प्रभाव बताइए ऐसे दुःखपूर्ण क्षण में हनुमान का आगमन करुण रस के बीच वीर रस के प्रकट होने जैसा है। उनकी उपस्थिति से शोक और निराशा के वातावरण में उत्साह तथा आशा का संचार होता है। कवि ने केवल पात्र का आना नहीं बताया, बल्कि उसके भावात्मक प्रभाव को भी सजीव बनाया है। करुणा से वीरता की ओर यह परिवर्तन अंश के भाव-सौंदर्य को प्रभावी बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष राम का विलाप और वानरों की व्याकुलता करुण भाव जगाते हैं; हनुमान का आगमन उसी वातावरण में वीरता, उत्साह और आशा का संचार करता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य बताते समय पहले शोक और व्याकुलता, फिर हनुमान के आने से उत्पन्न उत्साह का क्रम रखिए।

10(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार पहचानते समय कविता के शब्दों में उपस्थित वास्तविक तुलना या ध्वनि-साम्य का प्रमाण देना चाहिए।
- उपमा में उपमेय और उपमान की तुलना 'जैसे' के अर्थ वाले शब्द से होती है; अनुप्रास में किसी वर्ण की आवृत्ति होती है।

चरण 1: उपमा का उदाहरण समझाइए 'आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस' में उपमा अलंकार है। यहाँ 'जिमि' का अर्थ 'जैसे' है। शोकपूर्ण वातावरण में हनुमान के आगमन की तुलना करुण रस के बीच वीर रस के प्रकट होने से की गई है। इस तुलना से उनके आगमन का उत्साहकारी प्रभाव स्पष्ट होता है।

चरण 2: अनुप्रास की पहचान कीजिए 'बिकल भए बानर' में 'ब' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार उपस्थित है। यह ध्वनि-साम्य पंक्ति में लय और प्रवाह उत्पन्न करता है। इस प्रकार उपमा भाव के परिवर्तन को चित्रात्मक बनाती है और अनुप्रास भाषा को श्रवणीय तथा प्रभावशाली बनाता है। दोनों अलंकार प्रसंग की संवेदना को सहज ढंग से उभारते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'जिमि करुना महँ बीर रस' में उपमा और 'बिकल भए बानर' में 'ब' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

त्वरित सुझाव: अलंकार के नाम के साथ उसका पदांश अवश्य लिखिए; उपमा में 'जिमि' और अनुप्रास में दोहराए वर्ण को पहचानिए।

10(ग). भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताओं में बोली, शब्द-चयन, लय और भाव-अभिव्यक्ति की उपयुक्तता देखी जाती है।
- दिए गए अंश के 'सुनि', 'भए', 'गयउ', 'जिमि' और 'महँ' जैसे रूप अवधी भाषा की पहचान कराते हैं।

चरण 1: भाषा और शब्दावली बताइए काव्यांश की भाषा अवधी है। 'सुनि', 'भए', 'गयउ' और 'जिमि' जैसे शब्द उसके लोकप्रचलित रूपों को सामने लाते हैं। भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है। 'प्रलाप', 'करुना' तथा 'बीर रस' जैसे शब्द दुःख और उत्साह के विरोधी भावों को थोड़े शब्दों में व्यक्त करते हैं।

चरण 2: शैली और ध्वनि-सौंदर्य समझाइए अंश में संक्षिप्त, चित्रात्मक और लयात्मक अभिव्यक्ति है। राम के प्रलाप से वानरों की व्याकुलता और फिर हनुमान का आगमन घटनाओं को गतिशील बनाते हैं। 'बिकल भए बानर' की ध्वनि-आवृत्ति भाषा को मधुरता देती है। 'जिमि' द्वारा की गई तुलना भाव-परिवर्तन को सहज समझाती है। इस प्रकार भाषा में प्रसादगुण, प्रवाह और भावाभिव्यक्ति की क्षमता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंश की अवधी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, लयात्मक और भावानुकूल है। लोकप्रचलित शब्द, अनुप्रास और चित्रात्मक तुलना उसके शिल्प को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की पहचान के समर्थन में 'गयउ' और 'जिमि' जैसे शब्द लिखिए, फिर लय तथा भावानुकूलता का उदाहरण दीजिए।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इस दंड विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता । सारी चुगली-चबाई की परिणति, उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी । जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं ; पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई । वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था । इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम में सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगौझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया । काम वही करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था । [8 अंक]

11(क). खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त उपमान का अर्थ उसके सामाजिक संदर्भ और पात्र के प्रति परिवार के व्यवहार से स्पष्ट होता है।
- 'खोटे सिक्के' और 'टकसाल' का प्रयोग परिवार की स्त्री-विरोधी सोच पर व्यंग्य करता है।

चरण 1: संबोधित पात्र पहचानिए 'खोटे सिक्कों की टकसाल' लछमिन अर्थात भक्तिन को कहा गया है। उसके बेटियाँ होने के कारण परिवार में उसे इस तिरस्कारपूर्ण उपमान से देखा जाता था। बेटियों को 'खोटे सिक्के' और उन्हें जन्म देने वाली माँ को उन्हें बनाने वाली 'टकसाल' मान लिया गया था।

चरण 2: कथन का सामाजिक आशय स्पष्ट कीजिए इस उपमान के पीछे पुत्र को अधिक महत्त्व देने और पुत्रियों को कमतर मानने की मानसिकता है। यह लछमिन या उसकी बेटियों की वास्तविक कमी नहीं है, बल्कि परिवार का भेदभावपूर्ण मूल्यांकन है। गद्यांश में पति का उसके प्रति अटूट प्रेम इस तिरस्कार के विपरीत खड़ा दिखाई देता है। वह पत्नी के परिश्रम, तेजस्विता और निष्ठा का सम्मान करता है।

चरण 3: निष्कर्ष लछमिन को बेटियाँ जन्म देने के कारण 'खोटे सिक्कों की टकसाल' कहा गया है। यह उपमान पुत्रियों को कमतर समझने वाली सामाजिक मानसिकता को प्रकट करता है।

त्वरित सुझाव: 'किसे' का उत्तर लछमिन से और 'क्यों' का उत्तर बेटियाँ होने तथा पुत्र-पक्षपाती सोच से जोड़कर दीजिए।

11(ख). लछमिन को ग्रामीण जीवन का अधिक ज्ञान क्यों था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी पात्र के ज्ञान का कारण उसके कार्य, अनुभव और जिम्मेदारियों से खोजा जाता है।
- लछमिन का ग्रामीण ज्ञान व्यावहारिक श्रम से अर्जित ज्ञान है; वह केवल दूसरों से सुनी जानकारी पर निर्भर नहीं है।

चरण 1: दैनिक काम से संबंध बताइए लछमिन घर और खेती से जुड़े काम स्वयं करती थी। गाय-भैंस की देखभाल, खेत-खलिहान और अमराई के पेड़ों आदि से उसका नियमित संबंध था। इसलिए ग्रामीण जीवन की आवश्यकताओं और कार्य-विधियों का उसे प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त था।

चरण 2: अधिक ज्ञान का आधार स्पष्ट कीजिए लगातार काम करने से उसे पशुओं, खेती और ग्रामीण संपत्ति की स्थिति का सूक्ष्म ज्ञान हो गया था। गद्यांश का वाक्य 'काम वही करती थी' इसी कारण को सीधे स्पष्ट करता है। दूसरों की अपेक्षा उसकी सक्रिय भागीदारी अधिक थी, इसलिए उसका ज्ञान भी बढ़ा-चढ़ा था। परिश्रम और जिम्मेदारी ने उसकी समझ को व्यावहारिक तथा भरोसेमंद बनाया था।

चरण 3: निष्कर्ष लछमिन ग्रामीण जीवन के काम स्वयं करती थी। गाय-भैंस, खेत-खलिहान और अमराई की प्रत्यक्ष देखभाल तथा निरंतर अनुभव के कारण उसे इनका अधिक ज्ञान था।

त्वरित सुझाव: उत्तर का आधार 'काम वही करती थी' बनाइए और उसके बाद पशुपालन तथा खेती से मिले प्रत्यक्ष अनुभव का उल्लेख कीजिए।

11(ग). किन गुणों के कारण पत्नी पति की प्रेम पात्र थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-संबंधी उत्तर में पात्र के गुण गद्यांश के शब्दों और व्यवहार से प्रमाणित किए जाते हैं।
- यहाँ पत्नी के प्रति पति का प्रेम उसके परिश्रम, तेजस्विता और निष्ठा की पहचान से जुड़ा है।

चरण 1: पत्नी के प्रमुख गुण बताइए लछमिन परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति पूर्णतः सच्ची तथा निष्ठावान थी। वह घरेलू और ग्रामीण कामों की जिम्मेदारी स्वयं संभालती थी। उसके व्यक्तित्व में आत्मसम्मान भी था। पति उसके इन गुणों को पहचानता था और उसे बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी मानता था।

चरण 2: गुणों और पति के व्यवहार को जोड़िए परिवार की चुगली-चबाई भी पति को उससे विरक्त नहीं कर पाती थी। इसके विपरीत उसका पत्नी-प्रेम और बढ़ जाता था। वह उसे मारता-पीटता भी नहीं था। इससे स्पष्ट है कि उसका प्रेम केवल बाहरी प्रभाव पर आधारित नहीं था; वह पत्नी की सच्चाई, कर्मठता और तेजस्वी स्वभाव का सम्मान करता था। इसी स्नेह ने लछमिन को अलग गृहस्थी करने का साहस भी दिया।

चरण 3: निष्कर्ष अपने परिश्रम, तेजस्विता, आत्मसम्मान और पति के प्रति अटूट सच्चाई के कारण लछमिन पति की प्रेमपात्र थी। पति उसके व्यक्तित्व का सम्मान करता था।

त्वरित सुझाव: गुण गिनाकर छोड़ने के बजाय उन्हें पति के विश्वास और चुगली से अप्रभावित प्रेम के प्रमाण से जोड़िए।

11(घ). अलगौझा किसे कहते हैं ? लछमिन ने अलगौझा क्यों करवा लिया ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलगौझा संयुक्त परिवार से अलग होकर अपना स्वतंत्र गृहस्थ जीवन और संपत्ति का हिस्सा सँभालने की व्यवस्था है।
- उत्तर में लछमिन के परिश्रम, आत्मसम्मान और परिवार में उसके प्रति होने वाले भेदभाव को गद्यांश से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: अलगौझा का अर्थ अलगौझा का अर्थ है संयुक्त परिवार से अलग होकर अपनी गृहस्थी बसाना। इसमें परिवार की साझा संपत्ति का बँटवारा होता है और अलग होने वाला दंपती अपने हिस्से के खेत, पशु तथा घर के कामकाज की स्वतंत्र व्यवस्था करता है। इस प्रकार पहले की सामूहिक गृहस्थी के स्थान पर उसका अपना अलग परिवार और आर्थिक उत्तरदायित्व बन जाता है।

चरण 2: लछमिन के निर्णय का कारण लछमिन परिश्रमी और स्वाभिमानी थी। संयुक्त परिवार में उससे काम तो बहुत कराया जाता था, किंतु उसे जिठानियों की चुगली और विरोध का सामना करना पड़ता था। वह इस अन्यायपूर्ण वातावरण में दूसरों पर आश्रित नहीं रहना चाहती थी। पति का प्रेम और समर्थन मिलने पर उसने अलगौझा करवा लिया। काम स्वयं करने के कारण उसे गाय-भैंस, खेत-खलिहान और अमराई का अच्छा ज्ञान था; इसलिए वह अपनी अलग गृहस्थी सँभालने में सक्षम भी थी।

चरण 3: निष्कर्ष अतः अलगौझा परिवार का बँटवारा करके अलग गृहस्थी बसाना है। लछमिन ने परिवार की चुगली और विरोध से मुक्ति, आत्मसम्मान की रक्षा और स्वतंत्र जीवन के लिए ऐसा किया।

त्वरित सुझाव: अर्थ बताने के बाद कारण लिखें और परिश्रम तथा पति के समर्थन के प्रमाण गद्यांश से जोड़ें।

12(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए । भक्तिन के स्वभाव की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में किसी गुण का नाम देने के साथ पाठ की घटना से उसकी पुष्टि करनी चाहिए।
- भक्तिन के व्यक्तित्व में परिश्रम, स्वाभिमान और सेवाभाव एक साथ दिखाई देते हैं।

चरण 1: परिश्रमी और कर्मनिष्ठ भक्तिन अत्यंत परिश्रमी तथा कर्मनिष्ठ थी। ससुराल में घर और खेती से जुड़े अनेक कठिन काम वही करती थी। इसी कारण खेत-खलिहान, पशुओं और पेड़ों के विषय में उसका ज्ञान दूसरों से अधिक था। महादेवी वर्मा के यहाँ भी वह भोजन तथा घर के काम पूरी लगन से करती है। वह कठिनाइयों से घबराकर बैठने के बजाय श्रम के बल पर जीवन चलाती है। इससे उसकी कार्यकुशलता और जिम्मेदारी निभाने की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

चरण 2: स्वाभिमानी और दृढ़निश्चयी भक्तिन में गहरा आत्मसम्मान था। वह अपने व्यक्तित्व को किसी के सामने हीन नहीं मानती थी। परिवार की उपेक्षा और भेदभाव को चुपचाप जीवन की नियति मानने के बजाय उसने अलग गृहस्थी सँभालने का साहस किया। लेखिका के यहाँ नौकरी करते हुए भी वह अपने अधिकारों और मान्यताओं पर दृढ़ रहती है। कभी-कभी उसका यही दृढ़ स्वभाव हठ का रूप ले लेता है, किंतु इसके मूल में उसकी स्वतंत्रता और आत्मसम्मान है।

चरण 3: स्नेहशील और सेवाभावी भक्तिन लेखिका के प्रति अत्यंत आत्मीय और सेवाभावी है। उसका संबंध केवल वेतन लेकर काम करने वाली सेविका का नहीं रह जाता। वह लेखिका की सुविधा, भोजन और दिनचर्या की चिंता अपने परिवार के सदस्य की तरह करती है। विपत्ति में भी लेखिका का साथ देने का उसका निश्चय उसकी निष्ठा प्रकट करता है। वह अपने स्नेह को बड़ी-बड़ी बातों के बजाय निरंतर सेवा और साथ निभाने के व्यवहार में व्यक्त करती है।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं—परिश्रम और कर्मनिष्ठा, स्वाभिमान और दृढ़ता, तथा आत्मीय सेवाभाव। इन्हीं गुणों से उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है।

त्वरित सुझाव: तीन अलग गुण चुनें और प्रत्येक के साथ पाठ का एक ठोस व्यवहार या प्रसंग अवश्य दें।

12(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए । डॉ. आंबेडकर जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे क्या तर्क देते हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन का आधार काम की आवश्यकता तथा व्यक्ति की योग्यता होना चाहिए।
- डॉ. आंबेडकर जाति-व्यवस्था में श्रम के साथ श्रमिकों का वंशानुगत और ऊँच-नीच वाला विभाजन देखते हैं।

चरण 1: श्रम के बजाय श्रमिकों का विभाजन डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा को केवल श्रम-विभाजन कहना गलत है, क्योंकि यह कामों को बाँटने के साथ-साथ काम करने वाले मनुष्यों को भी अलग-अलग खाँचों में बाँट देती है। ये खाँचे परस्पर बराबर नहीं हैं; इनमें ऊँच-नीच और सामाजिक प्रतिष्ठा का भेद जुड़ा होता है। सामान्य श्रम-विभाजन में अलग कार्य करने से व्यक्ति की मानवीय बराबरी समाप्त नहीं होती, जबकि जाति-प्रथा श्रमिकों के बीच स्थायी सामाजिक दूरी पैदा करती है।

चरण 2: जन्म का बंधन और चुनाव का अभाव जाति-प्रथा में व्यवसाय का निर्धारण व्यक्ति की रुचि, दक्षता या प्रशिक्षण के आधार पर नहीं, बल्कि जन्म और माता-पिता की सामाजिक स्थिति के आधार पर होता है। व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुकूल काम स्वतंत्र रूप से नहीं चुन पाता। इस प्रकार यह व्यवस्था स्वाभाविक योग्यता को विकसित करने के बजाय उसे दबाती है। आंबेडकर के लिए यह अनुचित है कि किसी का भविष्य उसके जन्म से ही निश्चित कर दिया जाए और उसकी व्यक्तिगत क्षमता को महत्व न दिया जाए।

चरण 3: परिवर्तन और आर्थिक दक्षता में बाधा समाज तथा उद्योग की आवश्यकताएँ बदलने पर व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलने की सुविधा मिलनी चाहिए। जाति का वंशानुगत बंधन इसमें बाधा बनता है और बेरोजगारी तक बढ़ा सकता है। कुछ कामों को हीन मानने से उन्हें करने वालों में काम के प्रति अरुचि भी पैदा होती है। इसलिए यह व्यवस्था न स्वतंत्रता देती है, न श्रम का सम्मान करती है और न

आर्थिक कार्यकुशलता को बढ़ाती है। इसे उपयोगी श्रम-विभाजन का पर्याय नहीं माना जा सकता।

चरण 4: निष्कर्ष आंबेडकर जाति-प्रथा को जन्म पर आधारित, ऊँच-नीच वाला और परिवर्तन-विरोधी श्रमिक-विभाजन मानते हैं। इसलिए वह इसे साधारण श्रम-विभाजन के समान स्वीकार नहीं करते।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम रखें—श्रमिकों का विभाजन, जन्म से पेशा तय होना और व्यवसाय बदलने पर रोक।

12(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए । लेखक को क्यों लगता है कि शिरीष एक अद्भुत अवधूत है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत निर्लिप्त और मस्त होता है; कठिनाइयाँ उसका सहज स्वभाव नहीं बदलतीं।
- लेखक शिरीष के प्रकृति-स्वभाव में विपरीत परिस्थितियों से जूझने की शक्ति और अनासक्ति देखते हैं।

चरण 1: कठिन मौसम में भी उल्लास लेखक को शिरीष अद्भुत अवधूत इसलिए लगता है कि वह भीषण गरमी और लू में भी फूलता रहता है। जब वातावरण की कठोरता अन्य वनस्पतियों को प्रभावित करती है, तब भी उसके कोमल फूल प्रसन्नता और सौंदर्य बिखेरते हैं। वह बाहर की तपन के सामने पराजित नहीं होता। उसके इस व्यवहार में लेखक ऐसे मस्त साधक की छवि देखते हैं जो कष्टों के बीच भी अपने भीतर की सरसता और आनंद को बचाए रखता है।

चरण 2: अनासक्ति और जीवन-शक्ति शिरीष मानो वायुमंडल से ही आवश्यक रस खींच लेता है और अपने ढंग से जीता है। वह विपरीत परिस्थितियों की शिकायत करके अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। उसकी निर्लिप्तता निष्क्रियता नहीं है; उसमें कठिन वातावरण में भी जीवित रहने और फूलने की सक्रिय शक्ति है। लेखक को उसकी यही सहज मस्ती और आत्मनिर्भरता अवधूत के समान लगती है। वह प्रतिकूलता से जूझता है, किंतु उसकी कठोरता को अपने फूलों की कोमलता नष्ट नहीं करने देता।

चरण 3: मानव जीवन के लिए प्रेरणा अवधूत की तरह शिरीष बाहरी उतार-चढ़ाव से ऊपर उठकर जीवन का सहज आनंद बनाए रखने की प्रेरणा देता है। लेखक उसके माध्यम से बताते हैं कि कठिन समय में भी मनुष्य को सरस, संवेदनशील और कर्मशील बने रहना चाहिए। जीवन की तपन के कारण अपना सौंदर्य और उदारता खो देना उचित नहीं है। शिरीष का आश्चर्यजनक गुण यही है कि उसकी मस्ती में पलायन नहीं, बल्कि प्रतिकूलता के बीच जीने और आनंद बाँटने का साहस है।

चरण 4: निष्कर्ष भीषण गरमी में भी फूलते रहने, वातावरण से जीवन-रस लेने और अनासक्त मस्ती बनाए रखने के कारण शिरीष लेखक को अद्भुत अवधूत लगता है।

त्वरित सुझाव: अवधूत का अर्थ बताकर शिरीष की गरमी में खिलने वाली विशेषता से उसका सीधा संबंध स्पष्ट करें।

12(घ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए । "बाज़ार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, वह देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय-शक्ति को" । – टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की व्यावसायिक दृष्टि में ग्राहक की पहचान उसकी खरीदने की सामर्थ्य से बनती है।
- क्रय-शक्ति पर आधारित समान व्यवहार और आर्थिक असमानता के बीच का अंतर समझना आवश्यक है।

चरण 1: कथन का आशय इस कथन का आशय है कि बाज़ार का प्रमुख उद्देश्य वस्तुएँ बेचना और लाभ कमाना है। इसलिए वह ग्राहक के स्त्री या पुरुष होने, उसकी जाति, धर्म अथवा क्षेत्र की अपेक्षा उसके पास उपलब्ध धन को अधिक महत्व देता है। अलग-अलग सामाजिक पहचानों वाले लोग यदि भुगतान कर सकते हैं तो बाज़ार उन्हें ग्राहक के रूप में स्वीकार करता है। इस व्यावसायिक संबंध में व्यक्ति की

क्रय-शक्ति ही उसके महत्व का मुख्य आधार बन जाती है।

चरण 2: समानता की सीमा बाज़ार का ऐसा व्यवहार ऊपर से भेदभावरहित लगता है, किंतु इसे पूर्ण मानवीय समानता नहीं कहा जा सकता। जिसके पास अधिक पैसा है, उसे अधिक वस्तुएँ, विकल्प और सुविधाएँ मिलती हैं; जिसके पास धन नहीं, उसकी जरूरतें होते हुए भी अधूरी रह सकती हैं। इस प्रकार जाति या धर्म के भेद का स्थान आर्थिक सामर्थ्य का भेद ले लेता है। बाज़ार की दृष्टि ग्राहक की मनुष्यता या वास्तविक आवश्यकता से अधिक उसकी खरीदने की क्षमता पर केंद्रित रहती है।

चरण 3: बाज़ार दर्शन से संबंध जैनेंद्र का बाज़ार-विवेचन हमें इस आकर्षण के प्रति सजग करता है। धन और वस्तुओं की चमक से प्रभावित ग्राहक अनावश्यक चीजें खरीदकर असंतोष बढ़ा सकता है। इसके विपरीत अपनी जरूरत पहचानकर खरीदने वाला व्यक्ति बाज़ार का सही उपयोग करता है। भगत जी चूरनवाले का सीमित कमाई से संतोष करना भी धन की अंधी दौड़ से अलग दृष्टि दिखाता है। अतः ग्राहक को अपनी आवश्यकता और विवेक के अनुसार खरीदना चाहिए, जिससे वह केवल क्रय-शक्ति के प्रदर्शन का साधन न बन जाए।

चरण 4: निष्कर्ष कथन बाज़ार के लाभ-केंद्रित स्वभाव को स्पष्ट करता है। वह सामाजिक पहचान से अधिक क्रय-शक्ति देखता है; इसलिए उसका उपयोग वास्तविक जरूरत और विवेक के साथ करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले क्रय-शक्ति का अर्थ स्पष्ट करें, फिर आर्थिक असमानता और विवेकपूर्ण खरीद से टिप्पणी पूरी करें।

12(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए । "पहलवान की ढोलक" के आधार पर भारतीय गाँवों की दीनता और असहायता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में महामारी से पीड़ित गाँव की दशा ग्रामीण गरीबी और सामाजिक उपेक्षा को सामने लाती है।
- ढोलक की आवाज़ संकट का भौतिक उपचार नहीं, भय और निराशा के बीच जीवित रहने का मानसिक सहारा है।

चरण 1: गाँव की दीनता और साधनों का अभाव कहानी का गाँव हैजे और मलेरिया की चपेट में है। गरीब ग्रामीणों के पास पर्याप्त भोजन, दवा और इलाज का प्रबंध नहीं है। दिन में लोगों की कराह और रात में मृत्यु का भय वातावरण को असहनीय बना देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अभावग्रस्त ग्रामीण समाज बीमारी जैसी विपत्ति का सामना करने के लिए आवश्यक सुविधाओं से वंचित था। महामारी केवल बीमारी नहीं रह जाती, वह गरीबी की मार को और गहरा कर देती है।

चरण 2: असहायता के बीच ढोलक का सहारा लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज़ सुनकर भयभीत लोगों को कुछ साहस मिलता है। अपने दोनों बेटों की मृत्यु के बाद भी उसका ढोलक बजाना दूसरों के प्रति संवेदना और संघर्षशीलता दिखाता है। किंतु यह साहस दवाओं और पोषण की कमी को दूर नहीं कर सकता। अंततः पहलवान की मृत्यु गाँव की उस असहायता को और उजागर करती है जिसमें संकट झेल रहे लोगों के लिए ठोस सहायता उपलब्ध नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मेरे विचार से कहानी भारतीय गाँवों की आर्थिक दीनता और उपेक्षा का मार्मिक चित्र है। ग्रामीणों के साहस का सम्मान करते हुए उनके लिए स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक सहयोग की वास्तविक व्यवस्था करना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: गाँव की दशा बताते समय महामारी, उपचार का अभाव और ढोलक से मिलने वाले साहस को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

13. आपके विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक तथा दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का ? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में तर्क सहित उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ में शिक्षा की इच्छा और पारिवारिक श्रम की माँग के बीच संघर्ष उभरता है।
- शिक्षा आत्मनिर्भरता, विवेक, प्रतिभा के विकास और सम्मानपूर्ण भविष्य की संभावना खोलती है; श्रम का सम्मान भी आवश्यक जीवन-मूल्य है।

चरण 1: शिक्षा के प्रति लेखक का दृष्टिकोण मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक समझता था कि केवल खेती के सीमित अवसरों में बँधे रहने से उसकी स्थिति नहीं बदलेगी। वह पढ़कर अपनी क्षमताओं का विकास करना चाहता था। पढ़ाई की उसकी इच्छा आलस्य या काम से बचने की युक्ति नहीं थी; विद्यालय जाने के लिए वह खेती का काम करने को भी तैयार था। इससे उसके भीतर परिश्रम, लगन और अपने भविष्य के प्रति जिम्मेदारी का परिचय मिलता है।

चरण 2: दत्ता जी राव का सहयोग और पिता की सीमा दत्ता जी राव ने लेखक की शिक्षा की इच्छा को गंभीरता से लिया और उसके पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए समझाया। उनका व्यवहार संवेदनशीलता तथा एक बालक की संभावनाओं के प्रति विश्वास व्यक्त करता है। इसके विपरीत पिता खेती में बेटे का श्रम चाहते थे और उसकी पढ़ाई को आवश्यक महत्त्व नहीं देते थे। घर की आर्थिक जरूरतों का विचार अपनी जगह उचित है, किंतु बच्चे के विकास के अवसर पूरी तरह रोक देना दूरदर्शिता नहीं है। तत्काल श्रम की जरूरत को ही अंतिम सत्य मानने से उसके जीवन के व्यापक अवसर सीमित हो जाते हैं।

चरण 3: जीवन-मूल्यों के आधार पर मूल्यांकन लेखक का संघर्ष बताता है कि आत्मविश्वास और निरंतर प्रयत्न से कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की राह निकल सकती है। विद्यालय पहुँचने पर उसकी अध्ययन और कविता में रुचि विकसित होती है; इससे शिक्षा की उपयोगिता उसके व्यक्तित्व-विकास में भी दिखाई देती है। दत्ता जी राव का सहयोग यह सिखाता है कि समर्थ व्यक्ति को दूसरों की प्रतिभा के लिए रास्ता खोलना चाहिए। श्रम और शिक्षा में संतुलन संभव है, पर शिक्षा का अधिकार दबाकर केवल काम करवाना उचित नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष इसलिए लेखक और दत्ता जी राव का पक्ष अधिक उचित तथा मानवीय है। उसमें श्रम के सम्मान के साथ शिक्षा, आत्मनिर्भरता, संवेदना और भविष्य के विकास को स्थान मिलता है।

त्वरित सुझाव: पक्ष चुनने के बाद लेखक की लगन, दत्ता जी राव के सहयोग और पिता की सीमित दृष्टि को जीवन-मूल्यों से जोड़कर तर्क दीजिए।

14(क). यशोधर बाबू के जीवन को दिशा देने में किसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी ? कैसे ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी के पाठ में यशोधर बाबू की जीवन-दृष्टि पर किशन दा के संस्कारों का गहरा प्रभाव है।
- चरित्र-चित्रण में किसी व्यक्ति के प्रभाव को उसके आदर्शों, व्यवहार और निर्णयों में दिखाई देने वाले परिणामों से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: किशन दा का संरक्षण और मार्गदर्शन यशोधर बाबू के जीवन को दिशा देने में किशन दा की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। युवावस्था में दिल्ली आने पर यशोधर बाबू को उनका सहारा मिला। किशन दा ने उन्हें अपने यहाँ स्थान दिया और नौकरी पाने में सहायता की। नए नगर में यह संरक्षण केवल रहने और रोजगार का प्रबंध नहीं था; इससे यशोधर बाबू को ऐसा आत्मीय मार्गदर्शक मिला जिसके जीवन को वे आदर्श मानने लगे। वे आगे चलकर भी अनेक परिस्थितियों को किशन दा की दृष्टि से परखते रहे।

चरण 2: सादगी, मर्यादा और सामाजिकता के संस्कार किशन दा सादगी, परंपरा और अपनत्व को महत्त्व देते थे। यशोधर बाबू ने उनसे मितव्ययिता, संयम और सामाजिक संबंध निभाने की प्रेरणा पाई। पहाड़ से आए लोगों के प्रति आत्मीयता और परिचितों के सुख-दुख में शामिल होने की प्रवृत्ति भी इसी प्रभाव से जुड़ी है। उनके लिए जीवन का मूल्य केवल धन, सुविधाओं और प्रदर्शन से तय नहीं होता। संबंधों की गरिमा तथा अपने संस्कारों के प्रति निष्ठा उनके आचरण का आधार बनती है।

चरण 3: बदलते परिवार में प्रभाव की अभिव्यक्ति परिवार की नई पीढ़ी के तौर-तरीकों और उपभोक्तावादी आकांक्षाओं के बीच यशोधर

बाबू बार-बार असहज होते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ के उत्सव के प्रति उनका संकोच भी उनकी जीवन-दृष्टि को सामने लाता है। वे कई प्रसंगों में मन-ही-मन सोचते हैं कि किशन दा होते तो क्या कहते या करते। इससे स्पष्ट है कि किशन दा उनके लिए स्मृति मात्र नहीं, व्यवहार और निर्णय की कसौटी बन गए हैं। हालांकि बदलते समय से तालमेल न बैठा पाना उनके भीतर द्वंद्व भी पैदा करता है; इसलिए इस प्रभाव के साथ उनकी जड़ हो चुकी आदतों की सीमा भी दिखाई देती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार किशन दा ने यशोधर बाबू को प्रारंभिक सहारा देने के साथ उनके चरित्र और जीवन-दृष्टि को आकार दिया। उनकी सादगी, सामाजिक आत्मीयता और मर्यादाप्रियता में किशन दा के संस्कार लगातार उपस्थित हैं।

त्वरित सुझाव: केवल किशन दा का नाम न लिखें; प्रारंभिक सहायता, मिले संस्कार और यशोधर बाबू के व्यवहार पर उनका प्रभाव भी बताइए।

14(ख). "टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुये पहलुओं के जीवंत दस्तावेज भी होते हैं ।" कैसे ? 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का यात्रा-वृत्तांत 'अतीत में दबे पाँव' मोहनजोदड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता के नगर-जीवन और उसकी सांस्कृतिक चेतना को समझता है।
- खंडहर केवल पुराने भवनों के अवशेष नहीं हैं। उनकी बनावट तथा वहाँ मिली वस्तुएँ तत्कालीन मनुष्यों की आवश्यकताओं, रुचियों, व्यवसायों और सामाजिक संबंधों का प्रमाण देती हैं।

चरण 1: नगर के अवशेषों में सुरक्षित दैनिक जीवन मोहनजोदड़ो की व्यवस्थित सड़कें, गलियाँ, मकान, कुएँ, स्नानघर और जल-निकासी की व्यवस्था बताते हैं कि यहाँ रहने वाले लोग नगर-नियोजन, स्वच्छता और सामूहिक सुविधा का महत्त्व समझते थे। घरों के आँगन और कमरों को देखकर परिवारों के रहने-सहने की कल्पना साकार होती है। लेखक इन निर्जीव दिखाई देने वाली ईंटों के बीच उन लोगों की उपस्थिति अनुभव करता है, जो कभी इन रास्तों से आते-जाते और अपने घरों में जीवन बिताते थे। इस प्रकार नगर का ढाँचा इतिहास की तिथि भर नहीं, मनुष्य के रोजमर्रा के जीवन की गवाही बन जाता है।

चरण 2: वस्तुओं से उभरती रुचियाँ और संस्कृति वहाँ मिले बर्तन, औजार, खिलौने, आभूषण, मुहरें और कलाकृतियाँ जीवन के अलग-अलग पक्ष सामने लाते हैं। बर्तन घरेलू आवश्यकताओं की, औजार श्रम और कारीगरी की, खिलौने बच्चों की दुनिया की तथा आभूषण सौंदर्य-बोध की जानकारी देते हैं। नर्तकी की कांस्य मूर्ति कलात्मक दक्षता और अभिव्यक्ति का साक्ष्य है। इन वस्तुओं के पीछे केवल निर्माण-कौशल नहीं, उन्हें बनाने और बरतने वाले मनुष्यों की इच्छाएँ, आनंद और सृजनशीलता भी दिखाई देती हैं।

चरण 3: सामान्य मनुष्य की उपस्थिति का अर्थ लेखक का ध्यान केवल किसी राजा या युद्ध के इतिहास पर नहीं है। वह नगर में साधारण निवासियों के सुव्यवस्थित जीवन और सामुदायिक समझ को पहचानता है। विशाल राजप्रासादों के वैभव की अपेक्षा यहाँ नागरिक सुविधाएँ और जीवन के उपयोगी साधन अधिक ध्यान खींचते हैं। खंडहरों का सूक्ष्म निरीक्षण उन अनकहे अनुभवों तक पहुँचाता है जिन्हें लिखित इतिहास प्रायः छोड़ देता है। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति की निजी कथा जानना संभव नहीं, अवशेषों से उसके जीवन की ठोस झलक अवश्य मिलती है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः मोहनजोदड़ो के टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता की उन्नति के साथ सामान्य लोगों के श्रम, पारिवारिक जीवन, कला-प्रेम और सामुदायिक चेतना के भी जीवंत दस्तावेज हैं। 'अतीत में दबे पाँव' हमें इन्हीं अवशेषों में अतीत की धड़कती हुई मानवीय दुनिया पहचानना सिखाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रत्येक अवशेष को जीवन के किसी पक्ष से जोड़ें; जैसे नालियाँ स्वच्छता से और खिलौने बाल-जीवन से संबंधित हैं।